राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दिव्य दिनकर

एक निडर सच का दर्पण | रांची और पटना से एक साथ प्रकाशित | 8

वर्ष 12 अकं :220 रांची (झारखंड) गुरुवार,22 मई 2025 पेज - 08 मूल्य: 2 RNI NO- JHAHIN/2013/54373

नेशनल हेराल्ड केस : राउज एवेन्यू कोर्ट में 2 से 8 जुलाई तक रोज होगी सुनवाई

एजेंसी

नई दिल्ली । नेशनल हेराल्ड से जुड़े मनी लांड्रिंग मामले में राउज एवेन्यू कोर्ट में बुधवार को हुई सुनवाई संपन्न हो गई। राउज ऐवन्यू कोर्ट मामले की अगली सुनवाई 2 से 8 जुलाई तक प्रतिदिन होगी। सोनिया गांधी और राहुल गांधी की तरफ से कोर्ट में वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने दलील पेश की। सिंघवी ने सुनवाई को जुलाई तक टालने की मांग की। सिंघवी का कहना था कि उन्हें हाल ही में चार्जशीट की कॉपी मिली है इसे पढ़ने में वक्त लगेगा। नेशनल हेराल्ड से जुड़े मनी लांड्रिंग मामले में कांग्रेस नेताओं के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय ने चार्जशीट दाखिल की है।

अभिषेक मनु सिंघवी की मांग का ईडी के वकील एएसजी एसवी राजू ने विरोध किया। राजू ने कहा, पिछली सुनवाई के समय ही चार्जशीट कॉपी उपलब्ध करवा दी गई थी और 21 तारीख को सुनवाई की तारीख तय की गई थी। उस समय सुनवाई टालने की मांग नहीं की गई लेकिन आज अचानक ऐसी मांग की जा रही है। विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने की कोर्ट 2 जुलाई से 8 जुलाई तक रोजाना सुनवाई करेगी। ईडी के वकील ने बताया कि, मामले में सोनिया गांधी को पहली आरोपी बनाया गया है जबकि दूसरे आरोपी राहुल गांधी हैं। अन्य पांच आरोपियों में सुमन दुबे, सैम पित्रोदा, यंग इंडियन, डोटेक्स मर्चेंडाइज प्राइवेट लिमिटेड और सुनील भंडारी का नाम शामिल है। कोर्ट ने कहा है, जिन आरोपियों की तरफ से कोई वकील नहीं है हम सुनवाई में उनके बिना भी आगे बढ़ेंगे। एएसजी राजू ने पीएमएलए की धारा 3 का हवाला देते हुए कोर्ट से कहा कि संपत्ति पर आरोपियों का कब्जा था। उस संपत्ति से आने वाला किराया भी अपराध की आय है । ईडी ने कहा , नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में कांग्रेस नेताओं सोनिया गांधी और राहुल गांधी को 142 करोड़ का फायदा हुआ। प्रवर्तन निदेशालय ने कहा कि, सोनिया गांधी और राहुल गांधी के खिलाफ 'प्रथम दृष्टया' मामला बनता है। हम तथ्यों से दिखाएंगे कि अपराध से प्राप्त आय के मूल्य में हुई वृद्धि भी अपराध की आय में शामिल की जाएगी।

ईडी का आरोप है कि सोनिया गांधी और राहुल गांधी की कंपनी यंग इंडियन ने एसोसिएट जर्नल प्रेस लिमिटेड की 2000 करोड़ रुपये से ज्यादा की संपत्तियों को महज 50 लाख में हासिल किया था। यह धोखाधड़ी है, इसमें 988 करोड़ की अवैध कमाई की गई। चार्जशीट धनशोधन निवारण अधिनियम 2002 के तहत दाखिल की गई है। इसमें पीएमएलए की धारा 3, 4, 44, 45 और 70 का उल्लेख किया गया है। यह पहला मौका है जब लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और वरिष्ठ कांग्रेस नेता सोनिया गांधी पर किसी मामले में चार्जशीट दाखिल की गई है। ईडी ने 2014 में मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट के आदेश पर एजेएल और यंग इंडिया के खिलाफ पीएमएलए के तहत जांच शुरू की थी। ईडी ने एजेएल और यंग इंडियन की करीब 751.9 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की है।

छत्तीसगढ़ में नक्सलियों पर सबसे बड़ी कार्रवाई : अबुझमाड़ में 26 नक्सली ढेर, एक करोड़ का इनामी राजू भी मारा गया

अबुझमाड़ वह इलाका है जो भूगोल की दृष्टि से दुर्गम और राज्य के सबसे संवेदनशील नक्सल इलाकों में से एक रहा है।

एजेंसी

रायपुर। छत्तीसगढ़ के घने जंगलों में नक्सलवाद के खिलाफ चल रही निर्णायक लड़ाई ने एक बड़ा मोड़ ले लिया है। नारायणपुर ज़िले के अबुझमाड़ क्षेत्र में सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में 26 नक्सलियों को ढेर कर दिया गया है। इस भीषण मुठभेड़ में एक जवान शहीद हो गया, जबकि एक अन्य घायल हुआ है, जिसकी हालत स्थिर बताई जा रही है। यह मुठभेड़ कोई सामान्य कार्रवाई नहीं थी, बल्कि यह छत्तीसगढ़ के इतिहास की सबसे बड़ी नक्सल विरोधी कार्रवाइयों में से एक मानी जा रही है। पिछले 50 घंटों से ज़्यादा समय से ऑपरेशन लगातार जारी है। डीआरजी के बहादुर जवानों ने बीजापुर, दंतेवाड़ा, नारायणपुर और कोंडागांव ज़िलों की सीमाओं से लगे घने जंगलों में

संयुक्त कार्रवाई की। सूत्रों के मुताबिक, अबुझमाड़ के गहरे जंगलों में नक्सलियों के बड़े कमांडरों को घेर लिया गया था। जैसे ही सुरक्षा बलों ने घेरा सख्त किया, मुठभेड़ तेज़ हो गई और अंततः 26 नक्सली मारे गए। मारे गए नक्सलियों में कई शीर्ष स्तरीय कमांडर शामिल हैं।

एक करोड़ का इनामी नक्सली लीडर 'राजू' भी ढेर

इस ऑपरेशन की सबसे बड़ी सफलता यह रही कि सुरक्षाबलों ने एक करोड़ रुपये के इनामी नक्सली कमांडर 'राजू' को भी मार गिराया। राजू छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में नक्सल गतिविधियों का मास्टरमाइंड था। उसने कई हमलों की साजिश रची थी और दर्जनों सुरक्षाबलों की शहादत का ज़िम्मेदार था। छत्तीसगढ़ के गृह मंत्री विजय शर्मा ने मुठभेड़ की पुष्टि करते हुए कहा, 'यह ऑपरेशन सुरक्षाबलों की वीरता और रणनीतिक कौशल का जीता-जागता उदाहरण है। जवानों की भुजाओं की ताकत से नक्सलियों के खिलाफ एक और बड़ी सफलता मिली है।

अभी सर्च ऑपरेशन जारी है, और मृतकों की संख्या और बढ़ सकती है।' उन्होंने यह भी जानकारी दी कि एक जवान घायल हुआ है जो खतरे से बाहर है, जबकि एक सहयोगी वीरगति को प्राप्त हुए हैं। छत्तीसगढ़ सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि राज्य को नक्सल मुक्त बनाने का संकल्प अब निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया है।

गुजरात में एशियाई शेरों की संख्या बढ़कर 891 हुई

एजेंसी

गांधीनगर। गुजरात के सासन गिर में पाए जाने वाले एशियाई शेरों के संबंध में अच्छी खबर है। इनकी संख्या बढ़ने के साथ इनका क्षेत्र भी बढ़ा है। यहां पिछली गिनती से 217 शेरों की संख्या बढ़कर 891 हो गई है। इस साल 10 से 13 मई 16वीं शेर गणना कार्यक्रम चलाया गया था। मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने बुधवार सुबह गांधीनगर सचिवालय में शेरों की गिनती के बाद इनकी संख्या को सार्वजनिक किया। इसमें नर शेर 196, मादा शेरनी 330, युवा शेर 59, युवा शेरनी 75, बच्चे 225 और पहचान नहीं किए जा सके 6 (1 वर्ष के कम उम्र वाले) मिलाकर कुल 891 हैं। गुजरात के गिर अभ्यारण्य और इसके आसपास के क्षेत्रों में 16वीं शेर गणना कार्यक्रम पूरा हुआ है। इस गिनती में शेरों की संख्या 891 पाई गई है। शेरों की संख्या गिनती के साथ ही शेरों का व्यवहार, आबादी का क्षेत्र और उनके स्वास्थ्य को लेकर भी विशेष ध्यान दिया गया। सरकार की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार शेरों का निवास स्थान अब गिर अभ्यारण्य की सीमा को पार कर अन्य क्षेत्रों में भी फैल गया है। वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव संजीव कुमार ने बताया कि इस बार शेरों की गिनती के लिए 11 जिलों की 58 तहसीलों के 35000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को शामिल किया गया है। इस अभियान में 535 गिनती करने वाले, सहायक, स्वयंसेवक, गांव के स्वयंसेवक मिलाकर कुल 3854 लोग शामिल हुए।

बिहार के सभी प्रखंडों में बनेगा कोल्ड स्टोरेज और गोदाम : सहकारिता मंत्री प्रेम कुमार

पूर्णिया । बिहार के सहकारिता मंत्री प्रेम कुमार ने पूर्णिया में प्रमंडलीय स्तर की विभागीय समीक्षा की और अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस मौके पर उन्होंने कहा कि प्रदेश के सभी प्रखंडों में कोल्ड स्टोरेज और गोदाम बनाए जाएंगे। उन्होंने कहा कि सहकारिता विभाग पैक्स के माध्यम से किसान, बुनकर और महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधारने का प्रयास कर रहा है। उन्होंने बताया कि बिहार में बड़े पैमाने पर सब्जी की खेती होती है, मगर 30 प्रतिशत सब्जी बर्बाद हो जाती है। सरकार बिहार के सब्जी उत्पादकों को बेहतर उत्पादन और बाजार तक पहुंचाने के लिए प्रखंड और पंचायत स्तर पर काम कर रही है। मंत्री प्रेम कुमार ने सब्जियों के निर्यात और विपणन को बढ़ावा देने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि बिहार में बड़ी संख्या में किसान सब्जी उत्पादन करते हैं, लेकिन उन्हें सही बाजार नहीं मिल पाता है। बिहार के 534 प्रखंडों में से 460 प्रखंडों में प्रखंड स्तरीय सहयोग समिति का गठन किया जा चुका है। प्रखंड स्तर पर 10,000 वर्ग फीट क्षेत्रफल का चयन किया जा चुका है, जिसमें 10 टन क्षमता वाले कोल्ड स्टोरेज और 20 टन की क्षमता वाले गोदाम का निर्माण कराया जाएगा। इसका निर्माण कार्य शुरू भी हो चुका है। उन्होंने कहा कि जलवायु और मिट्टी के आधार पर डेटा तैयार किया जा रहा है। पूर्णिया जिले में परवल और मिर्च का ज्यादा उत्पादन हो रहा है। विभाग बिहार में सब्जियों के उत्पादन और खपत पर भी आंकड़ा जुटा रहा है। सब्जियों के खपत से ज्यादा सब्जियों के उत्पादन की स्थिति में देश के अन्य राज्यों में भेजने की योजना बनाई जा रही है। देश के कई ऐसे राज्य हैं जहां परवल या कई अन्य तरह की सब्जियों की उपज नहीं होती है। बिहार के किसानों को इससे न केवल अच्छा बाजार मिल सकेगा, बल्कि उत्पाद के अच्छे मूल्य भी मिल सकेंगे।

'आतंकिस्तान' है पाकिस्तान, विश्व स्तर पर करेंगे साबित : सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल सदस्य

नई दिल्ली । जेडीयू सांसद संजय कुमार झा के नेतृत्व में पहला सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल आज जापान के लिए रवाना होगा। यह प्रतिनिधिमंडल आतंकवाद के खिलाफ भारत के वैश्विक कूटनीतिक अभियान का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य वैश्विक मंच पर आतंकवाद के प्रायोजक के रूप में पाकिस्तान की भूमिका को उजागर करना है। झा के नेतृत्व वाले इस प्रतिनिधिमंडल में शामिल भाजपा सांसद बृज लाल ने कहा, यह प्रतिनिधिमंडल बहुत प्रभाव डालेगा। पाकिस्तान पहले से ही आतंकवाद का गढ़ है और हम इसे साबित करेंगे। पिछले 35 वर्षों से पाकिस्तान लगातार भारत में आतंकवादी गतिविधियों को प्रायोजित कर रहा है। भाजपा सांसद हेमांग जोशी ने एकजुटता पर जोर देते हुए कहा, आज हमारा सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल एकजुट टीम इंडिया के रूप में दुनिया के विभिन्न देशों में जा रहा है। हम भारत का पक्ष रखेंगे और पाकिस्तान के आतंकवाद समर्थन को वैश्विक मंच पर उजागर करेंगे।सीपीआई(एम) सांसद जॉन ब्रिटास ने मिशन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, हम अब जापान जा रहे हैं, इसके बाद दक्षिण कोरिया, फिर इंडोनेशिया और मलेशिया जाएंगे। यह एक जनसंपर्क कार्यक्रम है, जिसका मकसद भारत की चिंताओं को व्यक्त करना और आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक समर्थन जुटाना है।

खड़गे के बयान पर भड़की भाजपा

सुंधाशु त्रिवेदी बोले- ऑपरेशन सिंदूर को 'मामूली घटना' बताना सेना का अपमान है

एजेंसी

नई दिल्ली । कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के 'ऑपरेशन सिंदूर' को लेकर दिए बयान पर राजनीति तेज हो गई है। भाजपा के राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कांग्रेस नेताओं के बयान पर सवाल उठाए।

उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर को मामूली घटना कहना न केवल निंदनीय है, बल्कि हमारे सशस्त्र बलों का भी अपमान है। भाजपा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने बुधवार को एक बयान में कहा, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा भारतीय सेना के अप्रतिम शौर्य और पराक्रम के प्रतीक ऑपरेशन सिंदूर को मामूली घटना कहना न केवल निंदनीय है, बल्कि हमारे सशस्त्र बलों के साहस और 140 करोड़ भारतीयों की भावनाओं का अपमान भी है। इससे पहले, राहुल गांधी ने भी भारतीय विमानों और अन्य संबंधित मामलों पर अनुचित टिप्पणियां की थीं, जैसा कि वे पहले भी बार-बार करते रहे हैं। उन्होंने आगे कहा, राहुल गांधी और अब मल्लिकार्जुन खड़गे के बयानों के बाद स्पष्ट हो गया है कि हाल के दिनों में 'इंडी गठबंधन' के नेताओं के बयान आकस्मिक नहीं, बल्कि एक सुविचारित, भारत-विरोधी और पाकिस्तान को ऑक्सीजन देने वाली विचारधारा से प्रेरित हैं। खड़गे का बयान यह भी दर्शाता है कि 'इंडिया गठबंधन' नाम रख लेने से कोई दिल से इंडियन नहीं हो जाता। आज तथाकथित 'इंडिया गठबंधन' के नेताओं के बयान जिस तरीके से पाकिस्तान की मीडिया में, पाकिस्तान की संसद में, पाकिस्तान की डिफेंस फोर्सेज की ब्रीफिंग में, पाकिस्तान द्वारा भारत के विरुद्ध अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिए जा रहे हैं, मुझे लगता है कि 'इंडिया गठबंधन' का नाम इंडिया रखना मुखौटा है, अंदर से ऐसा दिखाई पड़ता है कि यह 'पॉपुलर फ्रंट ऑफ पाकिस्तान' होता चला जा रहा है। सुधांशु त्रिवेदी ने शहबाज शरीफ के बयान का जिक्र करते हुए कहा, मैं खड़गे को एक बात याद दिलाना चाहता हूं कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री का ऑन रिकॉर्ड एक बयान है। शाहबाज शरीफ ने कहा कि हमें रात को 2:30 बजे 9 और 10 मई की दरमियानी रात को जगाया और कहा कि हिंदुस्तान ने हमारे नूर खान एयरबेस के ऊपर मिसाइल गिरा दी है। अगर इसके बाद भी कांग्रेस, खड़गे और राहुल गांधी को छिटपुट घटना नजर आती है तो यह दर्शाता है कि उनकी सोच कितनी छोटी है। यह वही पार्टी है, जिसके नेता सिद्धू पाकिस्तान जाकर वहां के सेनाध्यक्ष को गले मिल चुके हैं।

मुद्दे से ध्यान हटाने के लिए सरकार ने किया सांसदों का प्रतिनिधिमंडल भेजने का प्रयोग : संजय राउत

एजेंसी

मुंबई । शिवसेना (यूबीटी) नेता और राज्यसभा सांसद संजय राऊत ने विदेशों में भारतीय सांसदों के प्रतिनिधिमंडल को भेजने पर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि सरकार इस तरह का प्रयोग मुख्य मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए करती रहती है। सबसे पहले हमें पड़ोसी देश में जाना चाहिए। सांसद संजय राउत ने न्यूज एजेंसी से बातचीत के दौरान कहा कि चीन ने खुलकर पाकिस्तान का साथ दिया है। ऐसे में चीन जाकर पाकिस्तान को बेनकाब करना चाहिए। पड़ोसी देश आपको पूछता नहीं है। आप यूरोप, यूएस और अफ्रीकी देशों में जा रहे हैं, जिनका भारत और पाकिस्तान युद्ध से कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने कहा कि यह डेलिगेशन छोटे छोटे देशों में भेजे जा रहे हैं। इससे हमारी विदेश नीति से क्या संबंध है, खासकर भारत और पाकिस्तान के संदर्भ में। पड़ोसी देश के साथ आपके रिश्ते अच्छे नहीं हैं, इसलिए आप वहां नहीं जाना चाहते हैं। संजय राउत ने कहा कि केंद्र सरकार यह कैसे तय कर सकती है कि किस पार्टी से कौन सा सांसद प्रतिनिधिमंडल में जाएगा। आपने आनन-फानन में नाम तय कर लिया है। ममता बनर्जी की टीएमसी से आपने यूसुफ पठान का नाम तय कर दिया, ममता ने साफ मना कर दिया कि यह नहीं चलेगा। उन्होंने अभिषेक बनर्जी का नाम दिया।

प्रधानमंत्री मोदी ने दिलाई योग को दुनिया भर में पहचान : सीएम नायडू

एजेंसी

अमरावती । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने योग को पूरी दुनिया में पहचान दिलाई है। यह बात आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने बुधवार को कही। उन्होंने कहा कि योग भारत की ओर से दुनिया को दिया गया एक अनमोल उपहार है और आज लगभग सभी देश योग कार्यक्रम कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि योग केवल कुछ लोगों या जगहों तक सीमित नहीं है, यह सभी के लिए है। यह बातें उन्होंने 'योगांध्र 2025' नामक राज्य-भर के योग अभियान की शुरुआत के बाद पत्रकारों से कही। यह अभियान एक महीने तक चलेगा और इसका समापन 21 जून को विशाखापट्टनम में होने वाले 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह में होगा। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी भी भाग लेंगे। मुख्यमंत्री नायडू ने 'योगांध्र' वेबसाइट भी लॉन्च की और सभी लोगों से योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाने की अपील की। उन्होंने कहा कि योग से मानसिक तनाव दूर होता है, और यह केवल किसी एक दिन का कार्यक्रम या फोटो खिंचवाने का मौका नहीं है। योग ऐसा अभ्यास है जो जीवन में बड़ा बदलाव लाता है। हमें इसे अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए।' मुख्यमंत्री नायडू ने बताया कि 'योगांध्र' अभियान में कम से कम दो करोड़ लोगों की भागीदारी का लक्ष्य है और दस लाख लोगों को प्रमाण पत्र दिए जाएंगे। उन्होंने घोषणा की कि राज्य के सभी स्कूलों में रोजाना एक घंटे का योग सत्र आयोजित किया जाएगा। 21 जून को विशाखापट्टनम में होने वाले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में पांच लाख लोगों के भाग लेने की योजना है। यह कार्यक्रम आर.के. बीच से भोगापुरम तक फैलेगा। राज्य सरकार का लक्ष्य एक नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाना है, जिसमें एक ही जगह सबसे अधिक लोग योग करें, जिसमें विशाखापत्तनम में लगभग 2.5 लाख लोग भाग लेंगे। 2023 में सूरत में 1.53 लाख लोगों ने एक जगह इकट्ठा होकर योग किया था और तब नया रिकॉर्ड बना था।

दिव्यांग शिक्षण संस्थानों में संवेदनशील प्रशासनिक व्यवस्था सुनिश्चित करें : सीएम योगी

एजेंसी

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दिव्यांग युवाओं के लिए संचालित शैक्षिक संस्थानों में प्रशासनिक तंत्र को संवेदनशील, सजग और सतर्क रहने की आवश्यकता पर बल दिया है। बुधवार को दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि कुछ अराजक तत्व सुनियोजित ढंग से दिव्यांगजनों के विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भ्रम फैलाकर उन्हें अवांछित और समाजविरोधी गतिविधियों की ओर प्रवृत्त करने का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं। ऐसी प्रवृत्तियों के प्रति हमें पूर्णतः सतर्क रहते हुए विद्यार्थियों की सुरक्षा और मानसिक-सामाजिक संरक्षण सुनिश्चित करना होगा। उन्होंने निर्देश दिए कि इन संस्थानों में सहायता के नाम पर प्रस्ताव देने वाली बाहरी संस्थाओं की पृष्ठभूमि की गहन जांच-पड़ताल के उपरांत ही उनकी अनुमति दी जाए। सीएम योगी ने कहा कि प्रदेश के सभी बचपन डे केयर सेंटरों, मानसिक मंदित आश्रय केंद्रों, समेकित विद्यालयों तथा 'ममता', 'स्पर्श' और 'संकेत' विद्यालयों का व्यापक निरीक्षण किया जाए। यहां अध्ययनरत बच्चों से संवाद स्थापित कर उनकी आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और अभिभावकों की अपेक्षाओं को समझते हुए संस्थागत व्यवस्थाएं और अधिक सुदृढ़ की जाएं। इन विद्यालयों में शिक्षकों के रिक्त पदों को शीघ्र भरा जाए और जब तक नियमित नियुक्ति न हो, तब तक अन्य वैकल्पिक व्यवस्था से योग्य युवाओं की सेवाएं ली जाएं। इन युवाओं को भविष्य की चयन प्रक्रियाओं में वेटेज प्रदान किया जाना चाहिए। बैठक में दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग और पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग की योजनाओं, उपलब्धियों तथा कार्ययोजनाओं की अद्यतन स्थिति से मुख्यमंत्री को अवगत कराया गया। उन्होंने निर्देशित किया कि समस्त कल्याणकारी योजनाएं पारदर्शी और तकनीकी रूप से सुसज्जित हों तथा लक्षित लाभार्थियों को समयबद्ध रूप से लाभ प्रदान करें।

श्रद्धा और आस्था के साथ खुले द्वितीय केदार मद्महेश्वर मंदिर के कपाट

एजेंसी

रूद्रप्रयाग/मद्महेश्वर/उखीमठ। पंचकेदारों में प्रमुख द्वितीय केदार भगवान मद्महेश्वर मंदिर के कपाट बुधवार को पूर्वाह्न 11:30 बजे कर्क लग्न के शुभ मुहूर्त में वैदिक मंत्रोच्चार और नमः शिवाय के घोष के साथ विधिपूर्वक श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए। इस पावन अवसर पर तीन सौ से अधिक तीर्थयात्री और स्थानीय श्रद्धालु उपस्थित रहे।कपाट खुलने से पूर्व सुबह 10:30 बजे विशेष पूजा-अर्चना आरंभ हुई। मंदिर प्रांगण में भगवान मद्महेश्वर की चल विग्रह डोली के आगमन के बाद वैदिक विधि-विधान के साथ कपाट खोले गए। कपाट खुलते ही पुजारी शिवलिंग स्वामी ने स्वयंभू शिवलिंग का समाधि रूप श्रृंगार किया, जिसके पश्चात श्रद्धालुओं को निर्वाण दर्शन और फिर श्रृंगार दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर मंदिर परिसर को आकर्षक फूलों से सजाया गया था। भगवान की डोली ने कपाट खुलने से पूर्व परंपरा अनुसार भंडार और पूजन बर्तनों का निरीक्षण भी किया। बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) के अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने कपाटोद्घाटन पर श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दीं और विश्वास जताया कि बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचेंगे। बीकेटीसी उपाध्यक्ष ऋषि प्रसाद सती, विजय कपरवाण और मुख्य कार्याधिकारी विजय प्रसाद थपलियाल ने भी इस अवसर पर प्रसन्नता व्यक्त की। बीकेटीसी मीडिया प्रभारी डॉ. हरीश गौड़ ने बताया कि भगवान मद्महेश्वर की चल विग्रह डोली 18 मई को ओंकारेश्वर मंदिर, उखीमठ से यात्रा पर रवाना हुई थी।

मुंबई-कोलकाता सहित देश के कई शहरों में ईडी की छापेमारी

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की अलग-अलग टीमों ने बुधवार को मुंबई, बेंगलुरु, जालंधर, इंदौर और कोलकाता सहित देश के कई शहरों में छापेमारी की। छापेमारी की ये कार्रवाई एक फर्म में कथित मनी लॉन्ड्रिंग की जांच के सिलसिले में धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 के प्रावधानों के तहत की है।आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि ईडी ने तलाशी अभियान के दौरान करीब 6.43 लाख रुपये मूल्य की विदेशी मुद्राएं जब्त कीं। इनमें अमेरिकी डॉलर, सिंगापुर डॉलर और दिरहम शामिल हैं। केंद्रीय जांच एजेंसी ने इस कार्रवाई के दौरान 55.74 लाख रुपये मूल्य के सोने के सिक्के जब्त किए हैं। इसके अलावा बैंक खातों में करीब 94 लाख रुपये की राशि भी जब्त की गई।

संक्षिप्त समाचार

डॉ. अम्बेडकर पुस्तकालय में सिविल सेवा परीक्षा के अभ्यर्थियों के लिए विशेष कक्षा का आयोजन किया गया

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

[देवघर]: सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए Udaan IAS Academy, Ranchi द्वारा एक विशेष कक्षा का आयोजन डॉ. अम्बेडकर पुस्तकालय,देवघर में किया गया। इस विशेष सत्र में संस्थान के शिक्षक अभिषेक झा द्वारा सिविल सेवा प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा की रणनीति, उत्तर लेखन कौशल और समसामयिक मुद्दों पर चर्चा की गई। छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ प्रश्नोत्तर सत्र का भी आयोजन किया गया, जिसमें अभ्यर्थियों ने सिविल सेवा के विभिन्न पहलुओं के बारे में प्रश्न किया। उड़ान ias academy के शिक्षक ने बताया, इस पहल का उद्देश्य योग्य छात्रों को गुणवत्तापूर्ण मार्गदर्शन उपलब्ध कराना है, ताकि वे देश की सर्वोच्च सेवाओं में स्थान प्राप्त कर सकें। इस कक्षा के दौरान संस्थान के निदेशक और झारखण्ड के प्रसिद्ध शिक्षक अरुण अग्रवाल ने भी अभ्यर्थियों से फोन पर बात की और बहुत जल्द पुस्तकालय आने की बात की, और सभी अभ्यर्थियों को शुभकामनाएं दीं। इस अवसार पर डॉ अम्बेडकर पुस्तकालय के नवनिर्वाचित अध्यक्ष कन्हैया राम जी, सैकड़ो की संख्या में प्रतियोगिता परीक्षाओं कि तैयारी वाले अभ्यर्थी एवं पुस्तकालय के सभी सहायक उपस्थित रहे ।

मिर्जाचौकी रेलवे स्टेशन परिषर में अतिक्रमण के खिलाफ अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया

मंडरो: साहिबगंज रेलवे प्रशासन ने मिजाचौकी स्टेशन प्रबंधक अनिल वर्मा के उपस्थिति में मिर्जाचौकी रेलवे स्टेशन की जमीन को करवाया अतिक्रमण मुक्त। एक नंबर प्लेटफार्म के फूट ओभर ब्रिज के निकट बसा था अवैध रूप से एक परिवार। वही घर से परिजनों को भगाया और घर को जमींदोज किया।तीन नम्बर रेलवे लाइन के किनारे संचालित चाय पानी सहित मिठाई और नाई की दुकान को पीछे करवाया। रेलवे फाटक पर सियाराम चौधरी की पान की दुकान को हटवाया। वही बताया गया की तीन नंबर रेलवे लाइन किनारे नया टोला गांव में रेलवे की जमीन की कि आंकलन।जल्द ही नया टोला गांव में अतिक्रमण मुक्त को लेकर प्रशासन का चलेगा डंडा । स्थानीय लोगों के द्वारा रेलवे की जमीन पर बनवाया गया है घर को, प्रशासन द्वारा तुड़वाने की कवायद होगी जल्द शुरू।

स्व दुर्गा सोरेन की पुण्यतिथि पर विधायक ने किया माल्यार्पण, दी श्रद्धांजलि

मंडरो: झारखंड को बिहार से अलग राज्य बनाने के संघर्ष में दिशोम गुरु शिबू सोरेन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले स्व दुर्गा सोरेन की 15वी पुण्यतिधि मंडरो में बोरियो विधानसभा विधायक धनंजय सोरेन के नेतृत्व में जेएमएम सदस्यों के साथ श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई गई। बोरियो विधानसभा विधायक धनंजय सोरेन, जेएमएम जिलाध्यक्ष अरुण कुमार सिंह, केंद्रीय समिति सदस्य संजय मिश्रा उर्फ बबलु मिश्रा समेत अन्य जेएमएम सदस्यों ने स्व दुर्गा सोरेन की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी। वही बोरियो विधानसभा विधायक धनंजय सोरेन ने कहा की दादा दुर्गा सोरेन का जीवन हमारे लिए प्रेरणा स्रोत है। झारखंड राज्य आंदोलन के महान योद्धा समाजसेवी और क्रांतिकारी स्वर्गीय दुर्गा सोरेन को उनकी पुण्यतिथि पर शत-शत नमन ।उनके जीवन संघर्ष समर्पण और सेवा की मिसाल रहा है ।वह सदैव गरीबों वंचितों आदिवासियों और शोषितों की आवाज बन रहे। झारखंड राज्य की स्थापना में उनका योगदान अमिट है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनकी विचारधारा और सिद्धांत आज भी हम सभी के लिए प्रेरणा है। मौके पर सुबोध सोरेन, हीरा यादव, राजकुमार मिश्रा उर्फ संटी मिश्रा समेत अन्य जेएमएम सदस्य मौजूद थे।

साथी अभियान : एक भी बच्चा न छूटे, कानूनी पहचान की ओर कदम कार्यक्रम का आयोजन

साहिबगंज: झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के निर्देश पर साहेबगंज जिले में ह्यसाथीह्न अभियान की तैयारियाँ जोरों पर हैं। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार, श्री अखिल कुमार के मार्गदर्शन और सचिव विश्वनाथ भगत के नेतृत्व में यह पहल निराश्रित एवं असहाय बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए शुरू की गई है।राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकार, नई दिल्ली द्वारा प्रारंभ इस अभियान के तहत 26 मई से 26 जून 2025 तक एक माह का सघन पहचान अभियान चलाया जाएगा। इसका उद्देश्य ऐसे बच्चों की पहचान कर उनका आधार पंजीकरण कराना और उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा तथा अन्य सरकारी योजनाओं से जोड़ना है।इस अभियान के समन्वित क्रियान्वयन हेतु 'साथी जिला समिति' का गठन किया गया है, जिसकी अध्यक्षता विश्वनाथ भगत कर रहे हैं। समिति में महिला एवं बाल विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, आधार पंजीकरण पदाधिकारी, बालगृहों के प्रतिनिधि, अधिवक्तागण और पीएलवी सदस्य शामिल हैं। हाल ही में आयोजित एक बैठक में पुलिस उपाधीक्षक विजय कुमार कुशवाहा, जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी पूनम कुमारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी के प्रतिनिधि संजय कुमार तिवारी, सिविल सर्जन के प्रतिनिधि एस.एस.सी. हांसदा सहित पैनल अधिवक्ता एवं पीएलवी ने भाग लिया। बैठक में एक ओरिएंटेशन कार्यक्रम भी हुआ, जिसमें समिति के सदस्यों को उनकी जिम्मेदारियों से अवगत कराया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि अभियान का प्रचार-प्रसार प्रखंड और तालुका स्तर तक किया जाएगा ताकि कोई भी पात्र बच्चा इससे वंचित न रहे।ह्यसाथीह्न अभियान बच्चों को न सिर्फ कानूनी पहचान दिलाने का माध्यम है, बल्कि उनके सुरक्षित, सशक्त और गरिमामय भविष्य की नींव भी है।

देवघर जिला कांग्रेस द्वारा राष्ट्रीयव्यापी अभियान कार्यक्रम के तहत जिला स्तरीय संविधान बचाओ रैली का किया गया आयोजन

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर जिला कांग्रेस द्वारा राष्ट्रव्यापी अभियान कार्यक्रम तहत जिला स्तरीय ‡संविधान बचाओ रैली‡ का आयोजन देवघर शहर के आर.एन. बोस लाइब्रेरी परिसर में किया गया। इस रैली में पार्टी के कई शीर्ष नेताओं ने भाग लिया और केंद्र में नरेंद्र मोदी की सरकार पर संविधान से छेड़छाड़ करने तथा उसे बदलने का प्रयास का गंभीर आरोप लगाया। प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने संबोधन में कहा कि कांग्रेस ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी,लोकतांत्रिक व्यवस्था को कायम करने के लिए संविधान दिया,आज उस संविधान के पन्नों के साथ केंद्र की मोदी सरकार द्वारा छेड़छाड़ किया जा रहा है, उसे नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसा कांग्रेस कदापि होने नहीं देगी। संविधान हमें मौलिक अधिकार के साथ स्वतंत्रता एवं न्याय का अधिकार देता है,हर व्यक्ति को समानता का अधिकार मिला है। ऐसे में संविधान की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। इस देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में पूज्य बापू, पंडित नेहरू,सुभाष चंद्र बोस, मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे महापुरुषों की संघर्ष का परिणाम है। देश की आजादी में रस एवं भारतीय जनता पार्टी के किसी भी सदस्य ने एक बूंद खून नहीं बही नहीं इस आंदोलन में कभी हिस्सा लिया बदले अंग्रेजों की चाटुकारिता करते रहे उनके मुख विधि करते रहे। 58 वर्षों तक अपने कार्यालय में कभी तिरंगा नहीं लहराया। जिन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को जिन्होंने देश में अमन चैन और आजादी की नींद हमें दी उन्हें भी नाथूराम गोडसे के द्वारा हत्या कराया गया। आजादी के बाद संविधान निर्माण में संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ राजेंद्र प्रसाद एवं मसौदा समिति के सभापति डॉ भीमराव अंबेडकर बने। संविधान निर्माण में झारखंड के कई महापुरुषों के साथ इस देवघर की माटी के लाल पंडित विनोदानंद झा जी का भी योगदान रहा है,आज मैं उनका भी नमन करता हूॅं । लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि राज्यसभा में देश के गृह मंत्री अमित शाह द्वारा हमारे संविधान रचयिता डॉ भीमराव अंबेडकर पर बेहद अपमानजनक एवं आपत्तिजनक टिप्पणी किया जाता है। आज केंद्र की मोदी सरकार द्वारा संविधान में छेड़छाड़ करने के साथ संवैधानिक संस्थाओं को भी कमजोर करने का प्रयास किया जा रहा है। इलेक्शन कमीशन,प्रवर्तन निदेशालय, इनकम टैक्स जैसे संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर करते हुए उसका दुरुपयोग भी कर रही है। इसलिए आज देशवासियों को यह संदेश घर-घर तक पहुंचाने का काम है कि हमारे लोकतंत्र को जीवित रखने एवं अपने अधिकार बरकरार रखने के लिए संविधान की रक्षा करने की जरूरत है। आज राहुल गांधी सड़क से सदन तक संविधान की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। संविधान के अधिकार के तहत आज संथाल परगना में एस.पी.टी. एक्ट का अधिकार मिला है। इस अधिकार के साथ एससी,एसटी,अल्पसंख्यक, पिछड़ों गरीबों का आरक्षण को भी यह सरकार छिनने का प्रयास कर रही है। कर्नाटक के बेलगांव में कांग्रेस के विस्तारित बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के द्वारा दो अहम निर्णय लिए गए थे, पहला 2025 का वर्ष संगठन सृजन का होगा,वहीं दूसरा संविधान एवं देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था की रक्षा के लिए जय बापू,जय भीम,जय भीम कार्यक्रम आंदोलन के रूप में चलाया जाएगा,जो राज्य स्तर पर,जिला स्तर पर, विधानसभा स्तर पर रैलियां निकाली जाएगी तत्पश्चात हर घर एवं हर व्यक्ति तक यह संदेश घर-घर तक पहुंचाया जाएगा कि आज हमारे संविधानको बदलने का प्रयास किया जा रहा है, उसके साथ छेड़छाड़ किया जा रहा है। इसकी रक्षा करने के लिए तमाम देशवासियों को आगे बढ़ना होगा। वहीं उन्होंने कहा कि 26 नवंबर को एससी,एसटी, अल्पसंख्यक,पिछड़ा एवं गरीबों की आरक्षण के लिए तथा आदिवासी भाई बहनों के सरना धर्म कोड जैसे मांगों को लेकर राजभवन का घेराव

किया जाएगा। जिसमें भारी संख्या में हर जिले से पार्टी के नेता, कार्यकर्ता एवं समर्थक भारी संख्या में इकट्ठा होंगें । उसके बाद यह कार्यक्रम निरंतर चलता रहेगा। कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव एवं झारखंड के सह प्रभारी सिरिबेला प्रसाद ने कहा कि आज हमारे जननायक राहुल गांधी ने वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के 12 वर्ष के शासनकाल में देखा कि केंद्र सरकार निरंतर अपने हित के लिए संविधान में आम लोगों के लिए दिए गए हक एवं अधिकार को समाप्त करने का काम कर रही है।इसके लिए भारतीय संविधान के मूल्यों को नष्ट किया जा रहा है। ऐसे में हमें पार्टी द्वारा निर्देशित सारे कार्यक्रमों को आगे बढ़ाते हुए संविधान की रक्षा की लड़ाई में देश के हर एक घर एवं परिवार के लोगों को संदेश पहुंचाते हुए इस मुहिम में शामिल कराना है। जब संविधान बचेगा तभी देश बचेगा। उसके लिए सभी पार्टी के नेता एवं कार्यकताओं को कड़ी संघर्ष करनी पड़ेगी। कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रदीप यादव ने कहा कि वर्तमान में केंद्र की मोदी सरकार अपने चंद पूंजीपतियों मित्रों के लिए नित नए नियम बनाकर गरीबों के हक एवं अधिकार को हड़पने का प्रयास कर रही है। आज अडानी को कोयले के खदान दिए जा रहे हैं गरीब मजदूरों की जमीन को ओने-पोने भाव में उन्हें अपना व्यापार बढ़ाने के लिए दिया जा रहा है। गोड्डा में अडानी पावर प्लांट में किसानों की जमीन ली गई। यहां के कोयले खदान दिए गए और सारी बिजली बांग्लादेश को दिया जाता है। एक छटाक झारखंड को बिजली नहीं मिलता है। इसकी लड़ाई हम लड़ रहे हैं। हमारे नेता राहुल गांधी की हर बात आज सच साबित हो रही है और उनके संघर्ष बेहतर रंग ला रहे हैं। संविधान में दिए गए सभी जाति वर्गों के आरक्षण की लड़ाई लड़ रहे हैं। इनके जाति जनगणना कराने के आंदोलन के सामने केंद्र सरकार को झुकना पड़ा और जाति जनगणना की स्वीकृति देनी पड़ी। गत दिनों देश के पहलगाम में आतंकी घटना घटी ,हमारे नेता राहुल गांधी तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे जी के साथ पूरा विपक्ष ने सरकार को एक मत समर्थन दिया ताकि आतंकवाद का खत्मा हो सके। लेकिन दुख की बात है कि हमारे सेना का पराक्रम से आतंकवादियों पर की जा रही कार्यवाही को रोकने का निर्देश अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के द्वारा मिलता है। ऐसी स्थिति में पूरा देश फिर से कांग्रेस को याद कर रहा है, इंदिरा गांधी को याद कर रहा है। आगे प्रदीप यादव ने कहा कि संविधान से छेड़छाड़ लोकतंत्र की आत्मा पर हमला है और कांग्रेस इसे कभी स्वीकार नहीं करेगी। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी मैं संबोधन में कहा कि हमारे देश की रक्षा,संविधान की रक्षा, लोकतंत्र की रक्षा कांग्रेस और राहुल गांधी के अलावा कोई नहीं कर सकता है। देश की आजादी कांग्रेस ने दिलाई,संविधान कांग्रेस ने दिया और इसकी रक्षा भी कांग्रेस करेगी। इसके लिए हमारे कांग्रेस के एक-एक कार्यकर्ता मर मिटने को तैयार है। आगे उन्होंने अपने स्वास्थ्य विभाग द्वारा किए गए बेहतर कार्यों को गिनाया और उन्होंने बताया कि देवघर जिला के पुराने सदर अस्पताल को ट्रामा सेंटर बनाने का आदेश दिया गया।ये यहां की लंबी मांग थी, देवघर विधायक सुरेश पासवान ने भी प्रस्ताव दिया है। देवघर में एक सुपर स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल के साथ बहुत जल्द मेडिकल कॉलेज दिया जाएगा और स्वास्थ्य व्यवस्था को बेहतर बनाया जाएगा। आगामी श्रावणी मेला में स्वास्थ्य विभाग का बेहतर व्यवस्था रहेगी। कांवरिया बंधु के स्वास्थ्य संबंधी हर खर्च स्वास्थ्य विवाह उठाएगी। प्रदेश के कार्यकारी अध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री बंधु तिर्की ने भी इस संविधान की सुरक्षा के लिए कांग्रेस के हर सिपाही को आगे बढ़ने और इसे अंजाम तक पहुंचाने के लिए प्रेरित किया। इनके अलावे पूर्व सांसद फुरकान अंसारी,पूर्व सांसद एवं पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप बालमुचु,पूर्व मंत्री बादल पत्रलेख,जिला के पर्यवेक्षक अजय दुबे ने भी मुख्य रूप से संबोधित किया एवं कार्यकर्ताओं में जोश भरे। सभी नेताओं ने अपने संबोधन में रैली को सफल बताते हुए जिला कांग्रेस कमेटी को बधाई दी नेताओं ने एक स्वर में कहा कि केंद्र की मोदी सरकार संविधान को कमजोर करने और बदलने की साजिश रच रही है। *रैली में भाग लेने के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश, सह प्रभारी सिरिबेला प्रसाद, पूर्व मंत्री बंधु तिर्की एवं पूर्व सांसद प्रदीप बालमुचू ने अंबेडकर चौक स्थित डॉ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी,टावर चौक स्थित राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर भी माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। तदुपरांत कार्यक्रम परिसर में स्थित स्वामी विवेकानंद एवं सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर भी माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि, साथ ही कार्यक्रम स्थल पर पहूंचते ही देश के भूतपूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न राजीव गांधी के शहादत दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा उनके योगदान एवं बलिदान को याद किया। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि आधुनिक भारत के निमार्ता, सूचना एवं प्रौद्योगिकी तंत्र के जनक,पंचायती राज व्यवस्था के संस्थापक एवं युवाओं के प्रेरणा स्रोत राजीव गांधी को हम याद कर उन्हें शत-शत नमन करते हैं।* रैली में कांग्रेस के जिला अध्यक्ष प्रो. उदय प्रकाश,बीस सूत्री जिला उपाध्यक्ष डॉ.मुन्नम संजय, मणिशंकर ,जिला महासचिव दिनेश कुमार मंडल,अवधेश प्रजापति,शबाना खातून, नागेश्वर सिंह, फैयाज केशर,राजेंद्र दास, कुमार राज,मीणा तुरी, नित्यानंद सेवक, मो बैलालुद्दीन,उपेंद्र राय रवि वर्मा,नगर अध्यक्ष रवि केसरी,ओम प्रकाश यादव, अमित पांडेय, सुधीर देव,रवि गुप्ता,मकसूद आलम, धर्मेंद्र सिंह, मो नसीम, प्रियांशु, अटल मिश्रा, गुलाब यादव, हेमंत चौधरी,प्रदीप नटराज,सुभाष मंडल,डॉ सिराज अंसारी,गोल्डी खान,मो श्याम,राजीव कुमार, नरेश यादव,संजीव चौधरी,पारस यादव,जयशंकर शरण,अमेरिका यादव, नजाबुल अंसारी,कृष्णा पास्वान, सौरभ दास,रामाकांत कुमार,राजा, अनुपलाल, चंदन, प्रीतम भारद्वाज,आदर्श केसरी, राजा साहिल,राजन,शैफ दानिश, नूनू खान,सिराज अंसारी, सूरज सिंह आदि मौजूद थे।

कार्यक्रम की सफलता पर जिला बीस सूत्री उपाध्यक्ष डॉ मुन्नम संजय एवं जिला अध्यक्ष प्रो उदय प्रकाश ने देवघर जिला कांग्रेस कमिटी के सभी सम्मानित नेताओं, पदाधिकारीयों,सदस्यों, कार्यकताओं,सभी प्रखंड,नगर, मंडल,पंचायत अध्यक्षों, सभी अग्रणी मोर्चा संगठन के जिला अध्यक्षों के साथ तमाम कार्यकताओं और समर्थकों को कार्यक्रम की सफलता पर धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि सभी के अथक प्रयास एवं सहयोग से बहुत ही कम समय में यह कार्यक्रम सफल कराया। आपकी उपस्थिति जोरदार रही इसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं।

चित्रांजलि कला समर कैंप: रचनात्मकता और रंगों से सजा बच्चों का सफर का आयोजन देवघर मे

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर:-गर्मी की छुट्टियों को रचनात्मकता और रंगों से भरपूर बनाने के उद्देश्य से चित्रांजलि ग्रुप द्वारा ह्यकला समर कैंपह्न का आयोजन आर.एन. बोस लाइब्रेरी में किया गया। यह तीन दिवसीय शिविर 21 से 23 मई तक आयोजित किया जा रहा है। इस कैंप का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ,जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सुधा पांडेय,मार्कण्डेय जजवाड़े,पिनाकी चक्रवर्ती और रजत मुखर्जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर अतिथियों ने बच्चों की कलात्मक अभिव्यक्ति की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजनों से बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने का सुनहरा अवसर मिलता है। कला न केवल बच्चों की रचनात्मकता को विकसित करती है,बल्कि उनमें आत्मविश्वास,अनुशासन और सोचने की क्षमता को भी बढ़ावा देती है। चित्रांजलि ग्रुप का मुख्य उद्देश्य बच्चों के अंदर छिपी कलात्मक प्रतिभा को उजागर करना और उन्हें एक ऐसा मंच प्रदान करना है, जहाँ वे अपनी कल्पनाओं को स्वतंत्रता के साथ रंगों और रेखाओं के माध्यम से व्यक्त कर सकें। इस शिविर में बच्चों को चित्रकला,रंग संयोजन,हस्तकला,और रचनात्मक अभिव्यक्ति जैसे विषयों में मार्गदर्शन दिया जा रहा है।चित्रांजलि ग्रुप में मधुमिता दासगुप्ता,प्रेम कुमार,माधव शर्मा,सुंदरम दे,प्राची प्रिया,आस्था, राजवीर,सत्यम,अमर,काजल और वैष्णवी राज जैसे समर्पित कलाकार शामिल हैं,जो इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। यह समर कैंप न केवल बच्चों के लिए एक प्रेरणादायक अनुभव है, बल्कि कला और संस्कृति को समाज में बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास भी है।

तेज आंधी ने किसान का घर किया क्षतिग्रस्त, हुआ बेघर

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवीपुर प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत रामूडीह पंचायत के कपसिया गांव में एक किसान का घर से तेज आंधीझतूफान के कारण पूरे घर का अल्बेस्ट्स उड़ा दिया। जानकारी हो कि कपसिया निवासी रंजीत मरिक का मिट्टी व ईंट का दिवाल और अल्बेस्ट्स का छावनी एक कमरा और एक बरामदा था। जिसे तेज आंधीझतूफान आने से उड़ा दिया। जिससे घर काफी हद तक क्षतिग्रस्त हो गया। जिसके कारण आंधी के बाद हुई मूसलाधार बारिश का पानी घर में घुस गया। जिसके कारण घर में रखा अनाज, कपड़ा आदि बर्बाद हो गया। अब उसके पास रहने का कोई घर नहीं है और किसी तरह अस्थाई छावनी बनाकर गुजरझबसर कर रहे हैं। इस बाबत अंचलाधिकारी खोपलाल राम ने बताया कि अंचल कार्यालय में पीड़ित का आवेदन प्राप्ति के पश्चात जांच पड़ताल कर आवश्यक कार्रवाई के लिए जिला भेजा जाएगा। ताकि उस पीड़ित को सरकारी लाभ दिलाया जा सके।

निदेशक, दूरसंचार विभाग, भारत सरकार की अध्यक्षता में हुई बैठक

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ समाहरणालय स्थित सभागार में निदेशक, दूरसंचार विभाग, भारत सरकार श्री देव शंकर की अध्यक्षता में आधारभूत दूरसंचार संरचना के विकास के हेतु संबंधित पदाधिकारियों के साथ समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले के सुदूर दुर्गम क्षेत्रों में मोबाइल नेटवर्क की समस्या एवं मोबाइल टाॅवर लगाने को लेकर चर्चा की गई। उप विकास आयुक्त द्वारा बताया गया कि बीते विधानसभा चुनाव में शैडो एरिया की मैपिंग में 3 स्थान चिन्हित किए गए थे। वही निदेशक दूरसंचार विभाग ने कहा कि पाकुड़ जिले में पांच स्थान ऐसे हैं जहां नेटवर्क कनेक्टिविटी नहीं है। निदेशक श्री देव शंकर ने समाज कल्याण विभाग, शिक्षा विभाग एवं आपूर्ति विभाग के पदाधिकारी को शैडो एरिया के संबंध में समेकित सूची समर्पित करने का निर्देश दिया गया ताकि किसी स्थान को लेकर दोहराव नहीं हो तथा शैडो एरिया की वास्तविक पहचान हो सके। निदेशक, दूरसंचार विभाग ने कहा कि पाकुड़ जिला आकांक्षी जिला के रूप में चिन्हित है तथा भारत सरकार आकांक्षी जिले में आधारभूत दूरसंचार संरचना के सतत विकास को लेकर प्रयासरत है। उन्होने बीएसएनएल एवं निजी कंपनी के प्रतिनिधियों को शैडो एरिया में मोबाइल नेटवर्क की समस्या को दूर करने का निर्देश दिया। साथ ही कहा कि दूरसंचार सुविधा मुहैया कराने के लिए विभाग हर संभव मदद देने के लिए तत्पर है, जरूरत है कि समस्याओं को चिन्हित कर सकारात्मक कार्रवाई किया जाय। तत्पश्चात लाभुकों के बीच परिसम्पतियों का वितरण किया गया जिसमें बच्चों का अन्नप्राशन, सेविकाओं को मोबाइल वितरण एवं प्रधानमंत्री आवास (ग्रामीण) के लाभुकों के बीच चाभी देकर शुभ गृह प्रवेश, मनरेगा जॉब कार्ड वितरण, कालाजार से ठीक हुए लाभुकों के बीच कालाजार कीट का वितरण किया गया। मौके पर पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार, उप विकास आयुक्त महेश कुमार संथालिया, एडीजी विशाल साह,परियोजना निदेशक, आईटीडीए अरूण कुमार एक्का, अपर समाहर्ता जेम्स सुरीन, सिविल सर्जन डॉ मंटू कुमार टेकरीवाल एवं विशेष कार्य पदाधिकारी त्रिभुवन कुमार सिंह, प्रशासक नगर परिषद अमरेन्द्र कुमार चौधरी एवं डीपीओ यूआईडी रितेश कुमार, पीएमयू के सदस्य उपस्थित रहे।

डीपीआरओ के द्वारा 15 वें वित्त आयोग से संचालित योजनाओं की समीक्षा की गई

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ जिला पंचायत राज पदाधिकारी प्रीतिलता मुर्मू ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से 15 वें वित्त आयोग द्वारा संचालित योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक की। बैठक में जिला परिषद सदस्य, सभी प्रमुख, उप प्रमुख, मुखिया गण, सहायक अभियंता एवं कनीय अभियंताओं के साथ बैठक की गई जिसमें अपूर्ण योजनाओं को जल्द से जल्द पूरा करने का निर्देश दिया गया एवं गुणवत्ता में ध्यान देने की बात कही गई। सभी कनीय अभियंता को जिले के सभी स्कूल में जाकर शौचालय का जांच कर जांच प्रतिवेदन उपलब्ध करने हेतु निर्देश दिया गया ताकि शौचालयों की मरम्मत्ती की जा सके। साथ ही सरकारी योजनाओं/ परिसंपत्तियों के संरक्षण करने हेतु लोगों को जागरूक करने का आग्रह किया गया।

खनन नियमों के धजिया उड़ाकर सीसीएल कर रही उत्खनन व कोल ढुलाई

कोल वाहन से कुचले गये युवक की हुई घटनास्थल में हीं दर्दनाक मौत

दिव्य दिनकर:जिला ब्यूरो, कुन्दन पासवान

टंडवा प्रखंड क्षेत्र में कोल वाहनों से हो रहे वीभत्स सड़क हादसे लोगों को झकझोर कर रख दिया है। बुधवार को टंडवा - सिमरिया मुख्य सड़क किनारे स्थित बिंगलात में पेट्रोल पंप के ठीक सामने आम्रपाली कोल परियोजना से लेकर राजधार साइडिंग जा रही अडानी कोल कंपनी से कार्य कर रहे समृद्धि एंटरप्राइजेज कोल कंपनी की कोयला लदे तेज रफ्तार हायवा जेएच 02 बीपी 8402 ने मोटरसा-इकिल पर दो सवारों को बुरी तरह से रौंद दिया जिससे आम्रपाली परियोजना क्षेत्र के कुमडांग कला निवासी 28 वर्षीय गणेश प्रजापति पिता स्व जगन्नाथ प्रजापति की मौके पर हीं दर्दनाक मौत हो गई। जबकि कुमडांग कला के 24 वर्षीय दीपक उर्फ छोटू ओझा पिता रामप्र-वेश उर्फ दुःखन ओझा को परिजनों द्वारा गंभीरावस्था में रांची ले जाया गया जहां रामप्यारी अस्पताल में इलाज हो रहा है। बताया गया कि उक्त घटना दिन में लगभग 12 बजे ड्यूटी के बाद मृतक दोस्त के अपने साथ घर जा रहा था। घटना की जानकारी मिलते हीं परिजनों के करुण चित्कार से मौजूद लोगों की आंखें नम हो गई। बताया गया कि मृतक गणेश की शादी पांच वर्ष पूर्व हुई थी जिससे ढाई साल का एक बेटा है एवं उसकी पत्नी आठ माह की गर्भवती भी है। जानकारी के अनुसार मृत युवक पीएनएम कंपनी में डीजल टैंकर चलाकर अपने परिवार का भरण-पोषण किया करता था। आसपास के सैंकड़ों ग्रामीणों ने आक्रोश व्यक्त करते हुवे कोल वाहनों का परिचालन ठप कर दिया जो समाचार लिखे जाने तक जारी था।

मांग का सिंदूर छीनने वालों पर हो अब ठोस कार्रवाई

पिछले लगभग एक दशक से जिस तरह कोयलांचल की सड़क

कोल वाहनों से लहूलुहान होता रहा है उसे देखकर लगता है की शीघ्र हीं लोगों के सब्र का बांध अब टूट जायेगा। सांसद, विधायक समेत तमाम प्रशासनिक अधिकारियों से आतंक और दहशत पर विराम लगाने की अपील की जा रही है।

मृतक के आश्रितों को 25 लाख मुआवजा दे ट्रांसपोर्टर: विधायक उज्जवल दास

सिमरिया विधायक उज्जवल दास ने मृतक के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुवे ट्रांसपोर्टिंग कंपनियों से अविलंब 25 लाख रुपए व घायल व्यक्ति के समुचित इलाज कराने की मांग की है। बहरहाल, देर शाम तक बूंदाबांदी बारिश में भी भीगकर ग्रामीण रोते बिलखते परिजन घटनास्थल पर बैठे हुवे थे।

ग्रामीणों ने जबाबदेह लोगों पर लगाया संवेदनहीनता का आरोप

कुमरांग खुर्द निवासी राजेंद्र प्रसाद ने परियोजना प्रबंधन, प्रश-ासनिक अधिकारी व जनप्रतिनिधियों पर संवेदनहीनता का आरोप लगाते हुवे कहा कि क्या वजह है कि कोल वाहन से अबतक हजारों लोगों का सड़क हादसे में वीभत्स मौत होने के बावजूद भी सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। उत्तरी क्षेत्र जिला परिषद सदस्य देवंती देवी ने बताई कि आम्रपाली कोल परियोजना में उत्खनन कार्य कर रही कंपनी व सीसीएल की आदेश पर नियमों को तक में रखते हुए कोल खनन कार्य की जा रही है, राजधानी रांची पब्लिक सड़क टंडवा अंचल स्थित जो चतरा जिला मुख्यालय जोड़ती है जो पब्लिक सड़क समीप कोल उत्खनन तथा पब्लिक सड़कों में ट्रांसपोर्टिंग की जा रही है। जिसकी शिकायत स्थानीय व्यक्तियों के द्वारा खनन विभाग एवंम खान सुरक्षा विभाग रांची तथा संबंधित अन्य विभाग को शिकायत कर जांच की मांग की गई थी परंतु जांच सिर्फ पेरो में सिमट कर रह गया है। वहीं गोपाल ओझा ने मौत के बाद शर्मनाक तरीके से मोलभाव कर असमान मुआवजा वितरण किये जाने को दुर्भाग्यपूर्ण बताया। घटनास्थल पर टंडवा अंचल विजय कुमार दास व टंडवा पुलिस मौके पर पहुंचकर ग्रामीणों को समझाने बुझाने में लगे हैं। मौके पर घटनास्थल में मुखिया पति गोपाल महतो ने कोल ट्रांसपोर्टिंग अनिश्चितकालीन बंद करने के लिये आमलोगों का आह्वान किया है। इस मौके पर धीरेन्द्र प्रजापति,जीवन सिंह, महेंद्र साव, विक्रम ठाकुर, रामाशीष प्रजापति,नरेश प्रजापति, रंजीत प्रजापति समेत कई लोग मौजूद थे।

संक्षिप्त समाचार

पाकुड़ शहर वासियो को इस गर्मी में बड़ी राहत, सभी वाटर एटीएम दुरुस्त

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ शहर में संचालित सभी वाटर एटीएम को जिला प्रशासन के प्रयास से ठीक करा लिया गया है। वर्तमान में सभी वाटर एटीएम सुचारू रूप से कार्य कर रहे हैं क जिसका उपयोग आमजन द्वारा किया जा हैं। एड नगर परिषद ने कहा कि इसमें सभी जन प्रतिनिधियों एवम प्रिंट सह एलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथियों का भरपूर सहयोग रहा है ! साथ ही नालियों की साफ सफाई, रेगुलर फोगिंग जिससे मच्छर ना पनपे, शहरी रंग रोगन, रोड इत्यादि की मैंटेनांस, स्कूल परिसर के आसपास साफ सफाई निरंतर कराई जा रही

50 किसानों का दल भ्रमण व प्रशिक्षण के लिए सबौर रवाना

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:आत्मा पाकुड़ से पांच दिवसीय प्रशिक्षण सह परिभ्रमण हेतु 50 किसान बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर रवाना हुआ। दिनांक 21 मई से 25 मई 2025 तक पाकुड़ जिला के किसान मिलेटस (मोटे अनाज) समेकित कृषि प्रणाली एवं कृषि से संबंधित प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। आज बुधवार को जिला संयुक्त कृषि भवन पि-रसर से जिला कृषि पदाधिकारी सह परियोजना निदेशक आत्मा के श्री मृत्युंजय कुमार के द्वारा सभी किसानों को बसों से रवाना किया गया। जिला कृषि पदाधिकारी मृत्युंजय कुमार ने कहा कि आज 50 किसानों के दल को बिहार कृषि विश्वविद्यालय सबौर भागलपुर रवाना किया गया। जिसमें वे मिलेटस संबंधित फसलों की कृषि तकनीकी, शोध उपलब्धियों, कृषि यंत्रों, उर्वरकों के संतुलित प्रयोग, कृषि विविधीकरण, मिलेट्स फसलों की उत्पादन, मिलेटस के विभिन्न उत्पाद, उनका पोषण में महत्व एवं उनके उपभोग की विस्तृत जानका-री व प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। जिससे वे खेती के क्षेत्र में नया आयाम प्राप्त कर सकें।

बीडीओ ने पीडीएस डीलरों के साथ की बैठक

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:अमड़ापाड़ा प्रखंड सभागार में प्रखंड विकास पदाधिका-री प्रमोद कुमार गुप्ता ने सभी पीडीएस डीलरों के साथ बैठक की। बीडीओ ने कहा कि सभी जन वितरण प्रणाली के लाभुकों को जून, जुलाई व अगस्त माह का खाद्यान्न जून माह के अंत तक उपलब्ध कराना है। जून व जुलाई माह का खाद्यान्न 1 से 15 जून तक और अगस्त माह के खाद्यान्न का वितरण 16 से 30 जून तक किया जाना है। खाद्यान्न रखने के लिए भंडारण को लेकर भी आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। सभी डीलर जून माह तक सभी लाभुकों का ई-केवा-इसी कराना सुनिश्चित करें।

कांग्रेस के अमरापड़ा प्रखंड अध्यक्ष बने पप्पू कांग्रेस जिला अध्यक्ष की माला पहनकर दी बधाई

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़: प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के द्वारा अनुशंसा और प्रदेश अध्यक्ष द्वारा निकाली गई पत्र के आलोक में रिक्त पड़े अमरापड़ा प्रखंड कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में मो पप्पू को प्रखंड अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया जिला अध्यक्ष श्री कुमार सरकार ने मो पप्पू को पत्र देते हुए माला पहनाकर बधाई दिया और संगठन के कार्यों को प्रखंड कमेटी बनाकर जल्द जिला को देने का निर्देश दिया गया, जिला अध्यक्ष ने शुभकामना देते हुए कहा की भविष्य में प्रखंड में संगठन को मजबूत बनाए ये यह हम सभी की शुभकामनाएं है वही मो पप्पू ने प्रखंड अध्यक्ष बनने पर सबसे पहले प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश और विधायक निसात आलम, जिला प्रभारी तनवीर आलम एवं जिला अध्यक्ष श्री कुमार सरकार का आभार प्रकट करते हुए कहा की जिस उम्मीद से मुझे जिम्मेदारी दी गई है उसे मैं ईमानदारी पूर्वक निर्वाहन करूंगा हिरणपुर प्रखंड अध्यक्ष मनोवर आलम ने कहा की विधानसभा क्षेत्र में एक प्रखंड में कमेटी रिक्त था वो पूरा हो गया इसके लिए जिला अध्यक्ष और हमारे नेता तनवीर आलम साहब का शुक्रिया अदा करते है और पप्पू जी को बधाई देते है उम्मीद करते है संगठन को मजबूती मिलेगा.

विश्व उच्च रक्त चाप दिवस के अवसर पर सिविल सर्जन सभागार में एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

डॉ युगल किशोर चौधरी, सिविल सर्जन देवघर के अध्यक्षता में डॉ मनोज कुमार गुप्ता, जिला नोडल पदाधिकारी, एन० सी० डी० कोषांग,देवघर, डॉ अभय कुमार यादव ,जिला भीबीडी पदाधिकारी देवघर, डॉ संचयन जिला यक्ष्मा पदाधिकारी, देवघर, डॉ राजीव कुमार, जिला कार्यक्रम पदाधिका-री,NOHP,के उपस्थिथि में विश्व उच्च रक्तचाप दिवस के अवसर पर 17 मई से 16 जून चलने वाले कार्यक्रम हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन सिविल सर्जन के सभागार में किया गया । आयोजित कार्यशाला में सभी CHOs को Diabetic एवं Hypertension के Screening से संबंधित pro-tocol के बारे में विस्तृत जानका-री दिया गया साथ ही डॉ मनोज कुमार गुप्ता के द्वारा यह बताया गया की हाइपरटेंशन, जिसे आमतौर पर उच्च रक्तचाप के रूप में जाना जाता है, एक ऐसी स्थिति है जिसमें आपकी धमनियों की दीवारों के खिलाफ रक्त का बल लगातार बहुत अधिक होता है। यह कई वर्षों तक बिना किसी स्पष्ट लक्षण के हो सकता है, यही वजह है कि इसे अक्सर मौन स्थिति के रूप में जाना जाता है। रक्तचाप को पारे के मिलीमीटर (mmHg) में मापा जाता है और इसे दो संख्याओं के साथ दर्ज किया जाता है: सिस्टोलिक दबाव (उच्च संख्या, हृदय के धड़कने के दौरान दबाव को मापती है) और डायस्टोलिक

दबाव (निम्न संख्या, धड़कनों के बीच हृदय के आराम करने के दौरान दबाव को मापती है) सामान्य रक्तचाप आमतौर पर 120/80 ल्ॅ के आसपास होता है। यदि आपका रक्तचाप लगातार 140/90 mmHg से अधिक है, तो इसे उच्च माना जाता है। उच्च रक्तचाप का आमतौर पर समय के साथ कई रीडिंग के बाद निदान किया जाता है, क्योंकि एक उच्च रीडिंग तनाव या शारीरिक गतिविधि जैसे अस्थायी कारकों के कारण हो सकती है। डॉ संचयन के द्वारा उच्च रक्तचाप एवं मधुमेह से सम्बंधित प्रोटोकॉल को IEC के माध्यम से विस्तृत से समझाया गया एवं सभी CHOs से बारी-बारी कर सवाल जवाब भी किया गया तथा यह भी बताया गया की उच्च रक्तचाप को अक्सर खामोश स्थिति कहा जाता है क्योंकि यह आमतौर पर अपने शुरूआती चरणों में ध्यान देने योग्य लक्षण पैदा नहीं करता है। कई लोग बिना जाने ही सालों तक उच्च रक्तचाप के साथ रह सकते हैं, यही कारण है कि नियमित निगरानी महत्वपूर्ण है। समय के साथ, अगर अनियंत्रित छोड़ दिया जाए, तो उच्च रक्तचाप शरीर के विभिन्न हिस्सों को प्रभावित करना शुरू कर सकता है और चेतावनी के संकेत दे सकता है, खासकर जब यह गंभीर हो जाता है या जटिलताओं का कारण बनता है। रक्तचाप के खतरनाक रूप से उच्च स्तर पर पहुंचने पर दिखाई देने वाले कुछ लक्षणों में शामिल हैं: बार-बार सि-रदर्द - ये सुस्त या धड़कते हुए हो सकते हैं और अक्सर सिर के पीछे या आंखों के पीछे महसूस होते हैं। चक्कर आना या बेहोशी महसूस होना - यह कम रक्त प्रवाह या मस्तिष्क के भीतर दबाव में बदलाव के कारण हो सकता है। धुंधला या दोहरी दृष्टि - उच्च रक्तचाप आंखों में रक्त वाहिकाओं को प्रभावित कर सकता है, जिससे दृष्टि संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। सीने में दर्द या जकड़न - यह संकेत दे सकता है कि हृदय तनाव में है, खासकर शारीरिक गतिविधि या तनाव के दौरान। सांस की तकलीफ - बढ़ा हुआ दबाव हृदय और फेफड़ों के एक साथ काम करने के तरीके को प्रभावित कर सकता है। नाक से खून आना - ये असामान्य है, लेकिन रक्तचाप अचानक बढ़ जाने या बहुत अधिक स्तर पर पहुँच जाने पर हो सकता है। थकान या भ्रम - ये तब विकसित हो सकते हैं जब प्रतिबंधित रक्त प्रवाह के कारण मस्तिष्क को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिलती है। वहीं उपस्थित डॉ राजीव कुमार के द्वारा उच्च रक्तचाप में शराब एवं तम्बाकू पदार्थो के सेवन से पड़ने वाले असर तो बताया गया । एवं साथ ही डॉ युगल किशोर चौधरी, सिविल सर्जन देवघर , डॉ मनोज कुमार गुप्ता, जिला नोडल पदाधिकारी, एन० सी० डी० कोषांग,देवघर, डॉ अभय कुमार यादव ,जिला भीबीडी पदाधिकारी देवघर, डॉ संचयन जिला यक्ष्मा पदाधिकारी, देवघर, डॉ राजीव कुमार, जिला कार्यक्रम पदाधिका-री,NOHP के द्वारा 5 5 Laptop, Printer, Laptop Bag को CHOs को प्रदान करते हुए 72 CHOs को LÔptop, Laptop, Printer, Laptop Bag एवं सभी CHOs को NCD से संबंधित IEC का भी वितरण करने का निर्देश दिया गया । उक्त कार्यशाला जिला एन० सी० डी० कोषांग द्वारा आयोजित किया गया जिसमे मुख्य सहयोग समरेश सिंह ,जिला कार्यक्रम प्रबंधक , रवि कुमार सिन्हा , अभिमन्यु कुमार दांगी, रवि चन्द्र मुर्मू , अभिषेक लाल का रहा ।

सहज के स्टेट हेड के द्वारा पाकुड़ जिले का किया गया दौरा

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ः सहज के स्टेट हेड के द्वारा पाकुड़ का दौरा किया गया। स्टेट हेड द्वारा बताया गया ₹सहज केंद्र₹ शब्द का अर्थ ₹सहज जन सेवा केंद्र₹, जो एक ऑनलाइन सेवा केंद्र है जो विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी सेवाएं प्रदान करता है। जन सेवा केंद्र के माध्यम से लोग कई प्रकार की सरकारी और गैरसरकारी से-वाओं का लाभ उठा सकते हैं, जैसे कि मोबाइल रिचार्ज, डीटीएच रिचार्ज, बिल भुगतान, मनी ट्रांसफर, जन सेवा केंद्र एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जो आवश्यक सेवाओं और सरकारी योजनाओं तक पहुँच प्रदान करता है, जो नागरिकों के लिए बिल भुगतान, दस्तावेज आवेदन, वित्तीय लेनदेन इसके अलावा आप 1 ही पोर्टल से 10 बैंकों का नया खाता खोल सकते है, मनी ट्रांसफर, पैसा जमा करना, पैसा निकालना आदि जैसी सेवाओं का लाभ उठाने के लिए एक केंद्रीकृत केंद्र के रूप में कार्य करता है। इसके अलावा सहज जन सेवा केंद्र के माध्यम से आप जियो का डिस्ट्रीब्यूटरशिप, करियर सर्विस को लेकर अपना आमदनी बढ़ा सकते है।

धर्म जागरण परिवार ने श्रद्धालुओं को सम्मानित करते हुए तीर्थ यात्रा के लिए किया रवाना

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ धर्म जागरण परिवार ओर से बुधवार को हरिद्वार, ऋषिकेश, केदारनाथ, बद्रीनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री, काशी विश्वनाथ के तीर्थ यात्रा पर जाने वाले 9 श्रद्धालुओं को माला पहनाकर और बोलबम स्मा-रका देकर उन्हें रवाना किया गया। साथ ही तीर्थ यात्रियों को नाश्ता, पानी भी दी गयी। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में धर्म जागरण परिवार पाकु-ड़ के सचिव विश्वनाथ भगत, सुनील तोला कोषाध्यक्ष ललन भगत, सीताराम पटवा, कन्हैया रजक, साधन रजक, नीलू चटर्जी, संजय चौबे, हरीश कुमार, तन्मय मंडल प्रवीण यादव, जय सिंहा, मेघदूत घोष सुभाष गुप्ता, विशुदेव और संजीत मुखर्जी सहित अन्य सदस्यों की मौजूदगी में सभी श्रद्धालुओं को विदा किया गया।

पुराना विधान सभा सभागार धुर्वा मे 25 मई 2025 को विश्वकर्मा लोहार समाज,झारखंड प्रदेश की होगी एक महत्वपूर्ण बैठक

दिव्य दिनकर संवाददाता

रांची - अपने अस्तित्व और पहचान के लिए पूरे झारखंड के लोहार एक मंच पर आएंगे। विदित हो झा-रखंड राज्य के कोने-कोने मे पूरे क्षेत्र के लोहार जाति अपनी पुस्तैनी लोहे का काम करते हुए अपना जीवन यापन कर रहे हैं।वर्तमान समय में अपने आप को विश्वकर्मा के वंशज मानते हुए लोहे को विभिन्न प्रकार के आकार देकर घरेलू उपयोग में आने वाले सामग्री का निर्माण करते हैं। लोहार जाति भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति में दर्ज है लेकिन झारखंड सरकार लोहार जाति को लोहार और लोहारा में बांटकर लोहार जाति को अनुसूचित जनजाति की सुविधा से वंचित कर रखा है। चूंकि लोहार झारखंड के सुदूर ग्रामीण इलाकों में गांव के लोगों को कृषि के औजार उपलब्ध कराते हैं इसलिए झारखंड में लोहा-रों की स्थिति राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से काफी पिछड़ते जा रहे हैं। केंद्र सरकार विश्वकर्मा कौशल योजना तो चला रही है लेकिन इस योजना का लाभ लोहारों को पूर्णरूप से नहीं मिल पा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में लोहारों की स्थिति अत्यंत दयनीय है साथ ही राजनीतिक के क्षेत्र में इसकी सहभागिता भी काफी कम है। इन सभी मुद्दों को लेकर झारखंड के लोहार भाई 25 मई 2025 को झारखंड विधानसभा के पुराने सभागार में विश्वकर्मा लोहार समाज झारखंड प्रदेश के बैनर तले एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया है जिसमें झारखंड राज्य के सभी जिले से लोहार भाई अपनी उपस्थिति दर्ज करेंगे और बैठक को सफल बनाएंगे। यह जानका-री समाजसेवी शिव किशोर शर्मा ने दी है।

राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर धुर्वा में दी गई भावपूर्ण श्रद्धांजलि, डॉ. रामेश्वर उरांव ने गिनाई पूर्व प्रधानमंत्री की दूरदर्शी उपलब्धियां

रांची राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन रांची के धुर्वा में राजीव गांधी वरिष्ठ नागरिक उद्यान में किया गया। इस कार्यक्रम में कई प्रमुख कांग्रेस नेताओं ने भाग लिया और राजीव गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ. रामेश्वर उरांव ने राजीव गांधी की दूरदर्शिता और उनके द्वारा युवाओं को लोकतंत्र में भागीदारी का अधिकार देने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि राजीव गांधी ने 21वीं सदी की दिशा में भारत को अग्रसर किया और 'डिजिटल इंडिया' की नींव रखी। उनके विचार और विजन आज भी लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं।आलोक कुमार दूबे ने राजीव गांधी के तकनीकी दृष्टिकोण और आत्मनिर्भर भारत के सपने की चर्चा की, जबकि डॉ. राजेश गुप्ता ने कंप्यूटर और संचार तकनीक के क्षेत्र में उनके योगदान को महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम के अंत में सभी ने दो मिनट का मौन रखकर राजीव गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके विचारों को आत्मसात करने का संकल्प लिया। इस अवसर

पर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष एवं विधायक डॉ. रामेश्वर उरांव, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव आलोक कुमार दूबे, डॉ. राजेश गुप्ता, कांग्रेस नेता फिरोज रिजवी मुन्ना, कुमुद रंजन, हैदर आलम,संजीत यादव,मेंहुल दूबे एवं वरिष्ठ नागरिक उद्यान समिति के सदस्य एस.के.झा,सत्यनारायण पाठक,अनिकेत कुमार उपस्थित रहे।

संथारा : 3 साल की बच्ची की मौत लंबे समय तक क्यों सालती रहेगी?

विचार

> मनोवैज्ञानिकों ने तब इस मामले पर विस्तार से चर्चा की थी और इस बात को रेखांकित किया था कि माता-पिता द्वारा डाला जाने वाला अप्रत्यक्ष दबाव किस तरह से बच्चे को मनोवैज्ञानिक रूप से कमजोर या लाचार बना सकता है। जब धर्म इसमें शामिल हो जाता है, तो उसके साथ अपराध बोध भी जुड़ जाता है, जो उन्हें बताता है कि अगर वे ऐसा-ऐसा नहीं करेंगे, तो परिवार को मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। तब वह यह मानने लगता है कि बच्चा जो कुछ भी कर रहा है, वह परिवार की भलाई के लिए ही है और उसे मूल रूप से अपने स्वास्थ्य का थोड़ा त्याग करना होगा।

सुभाष गाताडे

मनुष्य कभी भी बुराई का खुशी से पालन नहीं करता, जब तक कि वह धार्मिक विश्वास से प्रेरित न हो।" -- ब्लेज़ पास्कल (1623-1662), फ्रांसीसी गणितज्ञ, भौतिक विज्ञानी, आविष्कारक, दार्शनिक और कैथोलिक लेखक।

इंदौर के आईटी प्रोफेशनल की तीन वर्षीया बेटी नम्रता (बदला हुआ नाम) की मौत हो गई है। उसे ब्रेन ट्यूमर था, जिसका जनवरी में मुंबई में सफल ऑपरेशन किया गया था, लेकिन मार्च में यह फिर से उभर आया और एक सप्ताह से भी कम समय में उसने दम तोड़ दिया। उसकी कहानी में कुछ भी गलत नहीं लगता। बच्ची को सबसे अच्छा इलाज मिला और जैन समुदाय से ताल्लुक रखने वाले उसके माता-पिता के पास पैसे की कमी नहीं थी। इन सभी प्रासंगिक विवरणों के बावजूद, उसके जीवन के पिछले कुछ घंटों को भूलना या भुलाना मुश्किल है। जब वह जीवित थी और जिस तरह से उसे 'अपने अगले जन्म को बेहतर बनाने' के लिए कुछ अनुष्ठान करने पड़े थे - जैसा कि उसके माता-पिता को उनके आध्यात्मिक गुरु ने बताया था - वह बहुत दर्द में रही होगी। हमें पता चला कि अस्पताल के बिस्तर के बजाय, जहां उसे उपचारात्मक देखभाल दी जानी चाहिए थी, बच्ची को एक जैन साधु महाराज के आश्रम में स्थानांतरित कर दिया गया, जिसने अपने भोले-भाले शिष्यों (उस बच्ची के माता-पिता) को "उसकी पीड़ा कम करने और उसके अगले जन्म को बेहतर बनाने के लिए" संथारा का विकल्प चुनने के लिए राजी कर लिया था। और इन युवा आईटी पेशेवरों को, जो मुश्किल से 30 वर्ष के होंगे, अपनी मरती हुई बेटी को आश्रम में स्थानांतरित करने में कोई हिचकिचाहट नहीं हुई, जबकि वे अच्छी तरह जानते थे कि वह बहुत पीड़ा में थी और कोई भी ऐसा कार्य, जो उसके जीवन के लिए अप्रत्याशित हो, उसे मृत्यु की ओर और नजदीक ले जायेगा। संथारा या सल्लेखना, जैसा कि आम तौर पर जाना जाता है, एक जैन प्रथा है, जिसमें व्यक्ति स्वेच्छा से मरने के इरादे से भोजन और पानी त्याग देता है। मोटे अनुमान के अनुसार, हर साल लगभग 200 लोग इस प्रकार की सल्लेखना का विकल्प चुनते हैं। इस तथ्य को देखते हुए कि यह प्रथा आत्महत्या के समान है, राजस्थान उच्च न्यायालय ने इस प्रथा को अनुच्छेद 309 के तहत अवैध और अपराध घोषित किया था और कहा था कि इसे धर्म के आवश्यक अभ्यास का हिस्सा नहीं माना जा सकता है और इसलिए इसे अनुच्छेद 25 के तहत संरक्षित नहीं किया जा सकता है। यह अनुच्छेद'आत्महत्या के प्रयास' से संबंधित है। हालांकि, सर्वोच्च न्यायालय ने उच्च न्यायालय के इस फैसले पर रोक लगा दी है, लेकिन यह कहना गलत होगा कि आत्म-क्षति की इस परंपरा को स्वीकृति दे दी गई है। फिलहाल, इस प्रथा के बारे में किसी भी असहमति को दरकिनार किया जा सकता है, लेकिन कम से कम इस बात पर तो सहमति हो ही सकती है कि केवल एक वयस्क ही यह निर्णय ले सकता है कि उसे स्वेच्छा से मृत्यु का विकल्प चुनना है या नहीं। अगर हमारा संविधान किसी किशोर को वोट देने या ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने की अनुमति नहीं देता है, तो उससे यह कैसे उम्मीद की जा सकती है कि वह जीवन के बजाय मृत्यु का विकल्प चुनने की स्थिति में होगा। और एक बच्ची के लिए तो, जो बमुश्किल 3 साल की है, अपने आप ऐसा निर्णय लेना असंभव होगा। अगर वह इस प्रथा का पालन करती है, तो इसका केवल यही अर्थ लगाया जा सकता है कि उस पर यह प्रथा जबरन लादी गई है। रिपोर्ट्स में आगे बताया गया है कि सल्लेखना अनुष्ठान शुरू होने के चार घंटे के भीतर ही नम्रता की मौत हो गई। चौंकाने वाली बात यह है कि इस खबर को सार्वजनिक होने में डेढ़ महीने से भी ज़्यादा का समय लग गया, और वह भी तब जब अमेरिका स्थित संगठन गोल्डन बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने स्वीकार किया कि नम्रता "धार्मिक अनुष्ठान संथारा" करने वाली सबसे कम उम्र की व्यक्ति थीं।

नम्रता की दर्दनाक मौत कई सवाल खड़े करती है, जैसे -

1. कैसे उसके विद्वान माता-पिता की अजीब धार्मिक मान्यताओं ने उसे उसके अंतिम समय में एक तरह की यातना सहने के लिए मजबूर किया, जब वह गहरी पीड़ा में थी।
2. कैसे उन महत्वपूर्ण क्षणों में जब बच्ची को अतिरिक्त देखभाल की आवश्यकता थी -- शायद दर्द कम करने के लिए कुछ इंजेक्शन और अपने करीबी लोगों की संगति की जरूरत थी -- उसे एक अज्ञात स्थान पर ऐसे अज्ञात लोगों के बीच स्थानांतरित कर दिया गया, जिन्होंने उसे ऐसे अनुष्ठानों में शामिल किया, जिससे उसका दर्द और बढ़ गया।
3. यह सारा अत्याचार कथित तौर पर मूल रूप से 'उसके अगले जन्म को बेहतर बनाने' और उसे "संथारा लेने वाली सबसे कम उम्र की महिला" बनाने के लिए किया गया था।

आप इसे किसी भी तरह से कहने की कोशिश करें, आध्यात्मिक गुरु ने उस बच्ची के माता-पिता के साथ मिलकर न केवल बच्ची के दर्द को बढ़ाया, बल्कि उसकी मृत्यु को भी और निकट ला दिया। हमारा संविधान मानव जीवन की पवित्रता को अच्छी तरह से मान्यता देता है और प्रत्येक व्यक्ति के पास ऐसे अविभाज्य अधिकार हैं, जिन्हें तब तक नहीं छीना जा सकता, जब तक कि कानून स्वयं ऐसा करने का आदेश न दे। तब फिर उस बच्ची के माता-पिता और उनके आध्यात्मिक गुरु पर इस बुनियादी अवधारणा के अतिक्रमण के लिए मुकदमा क्यों नहीं चलाया जा सकता? क्या न्याय की मांग यह नहीं है कि पूरे मामले के कानूनी पहलुओं पर तुरंत गौर किया जाए और तीनों के खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई शुरू की जाए? क्या यह समय नहीं है कि बाल अधिकार आयोग आगे आए और पुलिस पर दबाव डाले कि वह बच्चे की मौत में शामिल व्यक्तियों के खिलाफ सख्त आरोप लगाए। क्या यह सही समय नहीं है कि हमारी कानून प्रवर्तन एजेंसियां कानून के ऐसे सभी उल्लंघनकर्ताओं को एक कड़ा संदेश भेजें, जो आस्था और धार्मिक अधिकारों की आड़ में ऐसे कई कृत्यों में लिप्त हैं, जो मूलतः मानव जीवन की पवित्रता का उल्लंघन करते हैं और इस प्रकार हमारे संविधान के मूल्यों और सिद्धांतों का उल्लंघन करते हैं। यह ध्यान में रखना होगा कि जब तक इस तरह के जबरिया बलिदानों के महिमामंडन पर सवाल नहीं उठाया जाता और उन्हें चुनौती नहीं दी जाती, तब तक लोगों को इसी तरह के कदम उठाने के लिए प्रोत्साहन मिलता रहेगा। क्या यह कहा जा सकता है कि नम्रता के माता-पिता को यह अनुष्ठान करने के लिए 'प्रेरित' किया गया था, क्योंकि उन्होंने अपने समुदाय में सिकंदराबाद की 13 वर्षीय लड़की की इसी तरह की 'संथारा' मृत्यु का महिमामंडन सुना था, और इस घटना के गवाह किसी भी करीबी रिश्तेदार के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई थी? तथ्य यह है कि अपने माता-पिता की धार्मिक मान्यताओं के कारण नम्रता की अचानक मृत्यु कोई अलग-थलग मामला नहीं है। कुछ साल पहले, हमने एक और 13 वर्षीया लड़की की भी इसी तरह की 'संथारा मृत्यु' देखी थी, जो एक बहुत ही अमीर जैन परिवार, जो आभूषण का व्यवसाय करता था, से संबंधित थी। दोनों मामलों में अंतर केवल इतना था कि यह लड़की 13 वर्ष की थी, जो 8वीं कक्षा में पढ़ती थी। यह लड़की भी कानूनी तौर पर वह वयस्क नहीं थी, इसलिए वह वोट देने या अपनी मर्जी से विवाह करने की स्थिति में नहीं थी और इसलिए अपने कल्याण के लिए अपने माता-पिता पर निर्भर थी। किसी भी समझदार और संवेदनशील व्यक्ति के लिए यह समझ से परे होगा कि उसने दो महीने से अधिक समय तक - सटीक रूप से 68 दिन - उपवास किया और उपवास समाप्त करने के दो दिन के भीतर ही हृदयाघात के कारण उसकी मृत्यु हो गई। उसे इतने लंबे समय तक उपवास करने के लिए किस बात ने प्रेरित किया होगा? मनोवैज्ञानिकों ने तब इस मामले पर विस्तार से चर्चा की थी और इस बात को रेखांकित किया था कि माता-पिता द्वारा डाला जाने वाला अप्रत्यक्ष दबाव किस तरह से बच्चे को मनोवैज्ञानिक रूप से कमज़ोर या लाचार बना सकता है। जब धर्म इसमें शामिल हो जाता है, तो उसके साथ अपराध बोध भी जुड़ जाता है, जो उन्हें बताता है कि अगर वे ऐसा-ऐसा नहीं करेंगे, तो परिवार को मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। तब वह यह मानने लगता है कि बच्चा जो कुछ भी कर रहा है, वह परिवार की भलाई के लिए ही है और उसे मूल रूप से अपने स्वास्थ्य का थोड़ा त्याग करना होगा। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि माता-पिता और यहां तक कि अन्य करीबी लोगों को भी उसे अपनी पढ़ाई पर ध्यान देने और ऐसी हरकतें न करने के लिए प्रेरित करना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ होगा। बल्कि घर का माहौल ऐसा रहा होगा कि परिवार में ही ऐसी हरकतों को बढ़ावा मिला होगा। पीछे मुड़कर देखें तो, उस समय जिस तरह से बच्ची के उपवास का प्रचार किया गया था, जिस तरह से समुदाय के लोग और यहां तक कि राजनीतिक नेता भी उपवास के दौरान उससे मिलने आए थे, वह सब हैरान करने वाला है। उपवास पूरा करने के दो दिन बाद उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां हृदयाघात से उसकी मौत हो गई। यह अविश्वसनीय लगता है कि आराधना के अंतिम संस्कार में कम से कम 600 लोग शामिल हुए और उसे 'बाल तपस्वी' बताया गया। अंतिम संस्कार जुलूस को 'शोभा यात्रा' कहा गया, जो उत्सव का प्रतीक था। अनशन और बाद में उसकी मौत का महिमामंडन करने के पूरे प्रकरण ने बाल अधिकार कार्यकर्ताओं को नाराज कर दिया, जिन्होंने उसके माता-पिता के खिलाफ मामला भी दर्ज कराया था। उसके माता-पिता के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 304 (2) (हत्या के लिए दोषी नहीं, गैर इरादतन हत्या) के अलावा किशोर न्याय अधिनियम की धारा 75 के तहत विधिवत एफआईआर दर्ज की गई थी। पता चला कि पुलिस ने 'सबूतों के अभाव में' पांच महीने के भीतर ही मामले को बंद करने का निर्णय ले लिया, जिसके कारण बाल अधिकार कार्यकर्ताओं की ओर से कड़ी प्रतिक्रिया हुई, जिन्होंने दावा किया कि पुलिस ने समुदाय के बुजुर्गों के साथ मिलकर मामले को कमजोर कर दिया और 'उचित जांच के बिना ही इसे बंद कर दिया। नम्रता की मृत्यु, जो उसके माता-पिता और उनके आध्यात्मिक गुरु द्वारा उस पर थोपी गई, तथा उसके पहले आराधना की मृत्यु, को अलग-थलग करके नहीं देखा जा सकता। स्वतंत्रता-पूर्व भारत ही नहीं, बल्कि स्वतंत्रता-पश्चात भारत भी ऐसे अनेक मानव-विरोधी व्यवहारों का साक्षी है, जो यहाँ मौजूद हर धर्म में प्रचलित हैं। वास्तव में, समय की मांग है कि ऐसी सभी मानव-विरोधी प्रथाओं के विरुद्ध आवाज़ उठाई जाए, जो मानवीय गरिमा को नकारने का महिमामंडन करती हैं। अब समय आ गया है कि हम यह घोषणा करें या संकल्प लें कि मेड स्नान जैसी प्रथाएं, या फिर युवा बेटियों को महिमा मंडित करना और उन्हें 'समर्पित' करना, ताकि वे औपचारिक रूप से अपना शेष जीवन 'भगवान की साथी' के रूप में जी सकें, -- लेकिन वास्तव में उन्हें यौन गुलामी का जीवन जीने के लिए अभिशप्त किया जाता है -- - देवदासी प्रथा आदि-आदि, इतिहास का हिस्सा बन जाएं। और आखिरकार किसी भी तरह के प्रतिक्रियावादी तत्वों, आस्था या प्रबंध के साथ कोई संबंध नहीं रखा जाए। शायद यही सबसे अच्छा तरीका है नम्रता को याद करने का, जो तीन साल की बच्ची थी और जिसे जबरिया मौत के हवाले कर दिया गया।

(लेखक एक वरिष्ठ और स्वतंत्र पत्रकार हैं!अनुवाद : संजय पराते)

संपादकीय

प्रोफेसर की गिरफ्तारी

एक ज्यादती भरी कार्रवाई में, रविवार को अशोक यूनिवर्सिटी में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर अली खान महमूदाबाद को हरियाणा पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उनके खिलाफ सोनीपत में दो अलग-अलग प्राथमिकियां (एफआईआर) दर्ज की गयी थीं। ये एफआईआर 'ऑपरेशन सिंदूर' के संबंध में उनकी सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर की गयीं। पहली पोस्ट में भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' के रणनीतिक कारणों को विश्लेषित किया गया, चूंकि उसे सेना के नेतृत्व वाले पाकिस्तानी शासन से निपटना था जिसने भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देते हुए गैर-राज्य कर्ताओं की आड़ में छिपने की कोशिश की है। इसमें यह भी जिक्र किया गया कि कैसे भारत की प्रेस वार्ताओं में मुस्लिम सैन्य अधिकारियों को शामिल किये जाने से देश की बहुलवादी दृष्टि प्रदर्शित हुई, भले ही यह उस सांप्रदायिक वास्तविकता के विपरीत हो जिसका सामना हाल के वर्षों में देश के विभिन्न हिस्सों में मुसलमान कर रहे हैं। दूसरी पोस्ट में संघर्षविराम के बाद कुछ नेटिजेन्स की "युद्ध के लिए अंध रक्तपिपासा" की निंदा की गयी और साथ ही दलील दी गयी कि युद्ध से सिर्फ दुनिया के सैन्य-औद्योगिक संकुल को लाभ होता है तथा हिंदू व इस्लामी, दोनों धर्मग्रंथों में इस बात पर जोर दिया गया है कि संघर्ष में धीरज व संयम ही सद्गुण हैं। उनकी पोस्टों में कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है। ये एक समावेशी भारत के लिए सीधे-सादे और देशभक्तिपूर्ण आह्वान थे तथा इस समझ को जाहिर करते थे कि भारत आतंकवादियों और पाकिस्तानी सैन्य शासन द्वारा समर्थित बृहत आतंकी बुनियादी ढांचे के बीच फर्क मिटाकर पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाने के लिए मजबूर हुआ है। हरियाणा पुलिस का कदम भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के युवा मोर्चा के पदाधिकारियों और हरियाणा राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष रेणु भाटिया की उन शिकायतों पर आधारित था जिनमें कहा गया कि ये पोस्ट वर्दीधारी महिलाओं के लिए अपमानकारी तथा भारत सरकार के लिए बुरी मंशा वाली थीं। यह सरासर झूठ है और अगर हरियाणा पुलिस ने इन पोस्टों को पढ़ने और उनके भीतर के एक ज्यादती भरी कार्रवाई में, रविवार को अशोक यूनिवर्सिटी में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर अली खान महमूदाबाद को हरियाणा पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उनके खिलाफ सोनीपत में दो अलग-अलग प्राथमिकियां (एफआईआर) दर्ज की गयी थीं। ये एफआईआर 'ऑपरेशन सिंदूर' के संबंध में उनकी सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर की गयीं। पहली पोस्ट में भारत के 'ऑपरेशन सिंदूर' के रणनीतिक कारणों को विश्लेषित किया गया, चूंकि उसे सेना के नेतृत्व वाले पाकिस्तानी शासन से निपटना था जिसने भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देते हुए गैर-राज्य कर्ताओं की आड़ में छिपने की कोशिश की है। इसमें यह भी जिक्र किया गया कि कैसे भारत की प्रेस वार्ताओं में मुस्लिम सैन्य अधिकारियों को शामिल किये जाने से देश की बहुलवादी दृष्टि प्रदर्शित हुई, भले ही यह उस सांप्रदायिक वास्तविकता के विपरीत हो जिसका सामना हाल के वर्षों में देश के विभिन्न हिस्सों में मुसलमान कर रहे हैं। दूसरी पोस्ट में संघर्षविराम के बाद कुछ नेटिजेन्स की "युद्ध के लिए अंध रक्तपिपासा" की निंदा की गयी और साथ ही दलील दी गयी कि युद्ध से सिर्फ दुनिया के सैन्य-औद्योगिक संकुल को लाभ होता है तथा हिंदू व इस्लामी, दोनों धर्मग्रंथों में इस बात पर जोर दिया गया है कि संघर्ष में धीरज व संयम ही सद्गुण हैं। उनकी पोस्टों में कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है। ये एक समावेशी भारत के लिए सीधे-सादे और देशभक्तिपूर्ण आह्वान थे तथा इस समझ को जाहिर करते थे कि भारत आतंकवादियों और पाकिस्तानी सैन्य शासन द्वारा समर्थित बृहत आतंकी बुनियादी ढांचे के बीच फर्क मिटाकर पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाने के लिए मजबूर हुआ है। हरियाणा पुलिस का कदम भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के युवा मोर्चा के पदाधिकारियों और हरियाणा राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष रेणु भाटिया की उन शिकायतों पर आधारित था जिनमें कहा गया कि ये पोस्ट वर्दीधारी महिलाओं के लिए अपमानकारी तथा भारत सरकार के लिए बुरी मंशा वाली थीं। यह सरासर झूठ है और अगर हरियाणा पुलिस ने इन पोस्टों को पढ़ने और उनके भीतर के स्पष्ट संदेशों को समझने की जहमत उठायी होती, तो इन शिकायतों पर कार्रवाई के लिए उसे कुछ खास आधार नहीं मिलता। यह भी चिंताजनक है कि ये गिरफ्तारियां जिन आरोपों पर की जा रही हैं वे देश की संप्रभुता और अखंडता को खतरे में डालने, और विभिन्न समूहों के बीच शत्रुता को बढ़ावा देने से संबंधित हैं झ यह हालिया अतीत में आलोचकों के खिलाफ लगाये जाने वाले राजद्रोह के आरोपों जैसे ही हैं। बार-बार, और बहुत गलत तरीके से, कानून प्रवर्तन एजेंसियों ने पूरे भारत में असहमति को कुचलने के लिए राजद्रोह के आरोप का इस्तेमाल किया है और प्रोफेसर की तकलीफें हाल के वर्षों में, खासकर भाजपा शासित राज्यों में, इसी हानिकारक प्रवृत्ति का लक्षण हैं। उनकी गिरफ्तारी अकादमिक स्वतंत्रता की खराब होती अवस्था का भी प्रतिबिंब है, जहां उच्च शिक्षा के संस्थानों में राज्य और सरकारों की नीतियों व कार्रवाइयों पर समालोचनात्मक समझ-बूझ और चिंतन को नापसंद किया जाता है और कुछ मामले में इसे आपराधिक तक बना दिया जाता है। सोमवार को भारत का सुप्रीम कोर्ट प्रोफेसर की गिरफ्तारी के खिलाफ उनका मामला फौरन सुनने के लिए राजी हुआ। सुप्रीम कोर्ट को अभिव्यक्ति की आजादी के महत्व को दोहराना चाहिए और उन कानून प्रवर्तन एजेंसियों के खिलाफ सख्त रवैया अपनाना चाहिए जो तुच्छ आधार पर राजद्रोह से संबंधित गंभीर आरोप जड़ने के लिए शक्तियों का दुरुपयोग करती हैं।

कोरोना की दस्तक पर सजगता जरूरी

ऋतुपर्ण दवे

देश-दुनिया पर कोरोना का संकट एक बार फिर मंडरा रहा है। वैसे देश में प्रभावितों की संख्या मामूली है। 19 मई तक आधिकारिक तौर पर 257 मामले थे। अभी बीते सप्ताह के ताजे आंकड़ों के अनुसार संख्या कम जरूर है लेकिन सच्चाई भी है कि मामले या तो समझ नहीं आ रहे या दर्ज नहीं हो रहे हैं। बीते सप्ताह केरल में 69, महाराष्ट्र में 44 और तमिलनाडु में 34 मामले दर्ज हुए। लेकिन शेष एशिया में जिस तरह से कोविड के मामले दर्ज हो रहे हैं, वे चिंता बढ़ाते दिख रहे हैं। हांगकांग और सिंगापुर में यह तेजी से फैल रहा है। अभी नया वैरिएंट जेएन-1 का प्रकोप जारी है। यह पहली बार अगस्त, 2023 में मिला था। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे दिसंबर, 2023 में ही 'वैरिएंट ऑफ इंटरेस्ट' घोषित कर साफ किया था कि यह ओमिक्रॉन बीए 2.86 का वंशज है। इसमें 30 के लगभग म्यूटेशन पाए गए जिनमें एलएफ7 और एनबी1.8 की संख्या ज्यादा थी। कोरोना की यह नई लहर साउथ-ईस्ट एशिया में ज्यादा असर दिखा रही है। सिंगापुर, हांगकांग और थाईलैंड जैसे देशों में कोविड के मामले बहुत ही तेजी से बढ़े हैं। अकेले सिंगापुर में मई की शुरुआत में 14,200 से ज्यादा नए मामले आए। इन जगहों पर भी जेएन1 और उसके उप-वैरिएंट ज्यादा मिल रहे हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि इन देशों में बढ़ते मामलों का कारण वहां लोगों के शरीर में एंटीबॉडी का कम हो जाना भी है। भारत में भी ऐसी संभावना से इंकार नहीं है। तमिलनाडु, केरल और महाराष्ट्र में धीरे ही सही, इसका बढ़ना अच्छा संकेत नहीं है। बीते 18 मई को ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के विस्फोटक बल्लेबाज ट्रैविस हेड कोरोना संक्रमित हुए तो दूसरे ही दिन बिग बॉस फेम शिल्पा शिरोडकर भी शिकार हो गईं। इतना तो समझ आ गया है कि सिंगापुर अब नया

हॉटस्पॉट बनकर उभर रहा है। सप्ताहभर में ही संक्रमण के मामलों में 28 फीसदी की वृद्धि चिंताजनक है। चीन से छन-छनकर जो निकल रहा है वहां भी बीते एक महीने में कोरोना मामलों में काफी तेजी आई है। लेकिन चीन से जितने वैरिएंट सामने आए, उसने दुनिया में कैसा विनाश मचाया था, सबने देखा। इस बार संक्रमित होने वाले अधिकतर लोग वे हैं जो कोमोरबिडिटी यानी सह-रुग्णता वाली स्थिति में हैं। इसमें प्रभावितों को एक ही समय में एक से अधिक बीमारियां होती हैं। कुछ सामान्य जोखिम कारक होते हैं, जबकि कुछ अन्य स्थितियों से उत्पन्न लक्षणों या उसके उपचारों के कारण होते हैं। अभी ज्यादातर लक्षण, कोमोरबिडिटी या फिर 65 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों में दिख रहे हैं। स्वास्थ्य जोखिमों को देखते हुए अधिकारियों ने डॉक्टर की सलाह पर अपडेटेड वैक्सीन लेने की सलाह दी है। उच्च जोखिम वाले बुजुर्गों, कोमोरबिडिटी के शिकार को पहले से ही सालाना कोविड-19 वैक्सीन लेने की सलाह दी जाती रही है। मुंबई के एक अस्पताल में दो मरीजों की मौत के बाद भ्रम की स्थिति बनी है। अस्पताल ने इन्हें गंभीर बीमारियों से हुई मौत बताया जिसका कोविड-19 से कोई संबंध नहीं था। अस्पताल का कहना है कि मौतें कोविड-19 से नहीं, बल्कि हाइपोकैल्सीमिक दौरे और कैंसर के साथ नेफ्रोटिक सिंड्रोम जैसी गंभीर बीमारियों के कारण हुई हैं। लेकिन चर्चा है कि दोनों मृतकों में कोविड के लक्षण थे। लगता नहीं कि ऐसी उहापोह वाली स्थितियों से कोविड को लेकर फिर पहले जैसा भ्रम फैलेगा? भारत में फिर से कोरोना वायरस के मामले धीरे-धीरे बढ़ने लगे हैं। हांगकांग के स्वास्थ्य अधिकारी अल्बर्ट अउ का बयान चिंताजनक है जिसमें उन्होंने माना कि कोरोना वायरस के मामले वहां तेजी से बढ़ रहे हैं। सांस लेने की तकलीफ वाले मरीजों के कोविड पॉजिटिव पाए जाने की संख्या अभी साल के महज पांचवें महीने में ही उच्च स्तर पर पहुंच गई है। जबकि चीन में श्वास संबंधी बीमारियों की जांच करवाने वाले मरीजों में कोविड वायरस पाए जाने के मामले दोगुने होना चिंताजनक है। लोगों को बूस्टर शॉट लेने की सलाह दी गई है। साथ ही चाइनीज सेंटर फॉर डिजीज एंड प्रिवेंशन के आंकड़ों के मुताबिक, कोविड की लहर तेज भी हो सकती है। साउथ-ईस्ट एशिया के हालात देखते हुए भारत भी सतर्क है। स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक ने राष्ट्रीय रोग नियंत्रण, आपदा प्रबंधन सेल, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और केंद्रीय सरकारी अस्पतालों के विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि कोविड के पुष्ट मामलों की मौजूदा संख्या 257 है। देश की आबादी के दृष्टिगत यह बहुत कम है। अस्पतालों को इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारियों और श्वसन संक्रमण के गंभीर मामलों की निगरानी करने के लिए कहा गया है। हालांकि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय स्थिति पर बारीकी से निगरानी रख हुए है। देशभर के सभी अस्पतालों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की भी जिम्मेदारी है कि वे सभी पर्याप्त इंतजाम रखें। जरा-सा संदेह होने पर चिकित्सकीय परामर्श में कोताही न बरतें। अच्छा हो कि अभी से सचेत हो जाएं।

दूरवर्ती तारे के निकट बर्फ की खोज

विजय गर्ग

खगोलविद वर्षों से सौरमंडल के बाहर पानी की बर्फ की खोज कर रहे हैं। उन्हें मालूम है कि यह बृहस्पति, शनि और उसके आसपास के चंद्रमाओं और बौने ग्रहों पर मौजूद है, लेकिन अभी तक वे अन्य तारों के आसपास इसकी मौजूदगी की पुष्टि नहीं कर पाए थे। अब जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप ने उनका काम आसान कर दिया है। शोधकर्ताओं ने इस टेलीस्कोप के नियर - इन्फ्रारेड स्पेक्ट्रोग्राफ उपकरण को 'एचडी 181327' पर लक्षित किया, जो 155 प्रकाश वर्ष दूर सूर्य जैसा एक तारा है। उन्होंने पाया कि तारे के चारों और धूल भरे मलबे की डिस्क में पानी की बर्फ के क्रिस्टल घूम रहे थे। यह बर्फ हमारे सौरमंडल के काइपर बेल्ट के बर्फीले पिंडों और शनि के छल्लों जैसे स्थानों पर भी पाई जाती है। खगोलविदों को काफी लंबे समय से दूरवर्ती तारों की डिस्क में पानी की बर्फ होने का संदेह है। स्पिट्जर स्पेस टेलीस्कोप ने 2008 में ही इस बात का संकेत दिया था, लेकिन इसके उपकरण इसकी पुष्टि करने के लिए पर्याप्त रूप से संवेदनशील नहीं थे। यहीं पर वेब टेलीस्कोप तारों के आस-पास के मलबे के डिस्क को स्कैन करने के लिए सुसज्जित है। यह टेलीस्कोप बर्फ, धूल और चट्टान के सबसे हल्के निशानों का भी पता लगा सकता है। इसके उपकरण उन छोटे कणों को पकड़ सकते हैं जिन्हें दूसरे टेलीस्कोप नहीं पकड़ पाते हैं। विज्ञानियों का कहना है कि जल बर्फ की उपस्थिति ग्रह निर्माण को सुविधाजनक बनाने में मदद करती है। बर्फीले

पदार्थ अंततः स्थलीय ग्रहों पर भी पहुंच सकते हैं। एचडी 181327 एक युवा तारा है। यह सिर्फ 2.3 करोड़ वर्ष पुराना है। इसकी तुलना में हमारा सूर्य 4.6 अरब वर्ष पुराना है। यह तारा सूर्य से ज्यादा गर्म और अधिक विशाल है और इसका सिस्टम अव्यवस्थित है। धूल चट्टान और बर्फीले पिंड आपस में टकराते हैं और बिखर जाते हैं, जिससे एक अव्यवस्थित मलबे की डिस्क बन जाती है। एचडी 181327 एक बहुत ही सक्रिय सिस्टम है। इसके मलबे की डिस्क में नियमित रूप से टकराव होते रहते हैं। जब ये बर्फीले पिंड आपस में टकराते हैं, तो वे धूल भरे पानी के छोटे-छोटे कण छोड़ते हैं। वेब टेलीस्कोप इन कणों को देख सकता है। ये कण आपस में चिपक सकते हैं, जिससे नए ग्रहों के बीज बन सकते हैं। लाखों वर्षों में, बर्फीले मलबे चट्टानी दुनिया में पानी और अन्य महत्वपूर्ण यौगिक पहुंचा सकते हैं। शोधकर्ताओं को लगता है कि इसी तरह से पृथ्वी को पानी मिला जब बर्फीले धूमकेतु और क्षुद्रग्रह युवाकाल में उससे टकराए थे। खगोलविदों के समक्ष एक बड़ा सवाल यह है कि क्या बर्फीले पिंड निर्माणाधीन ग्रहों तक पानी पहुंचा सकते हैं? और यदि ऐसा है, तो क्या ये ग्रह रहने योग्य परिस्थितियां भी विकसित कर सकते है ? वेब के उपयोग से इन सवालों का जवाब मिल सकता है।

(विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब)

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक , प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा न्यू लोक भारती प्रेस, वार्ड 10 कोकर औद्योगिक क्षेत्र कोकर रांची से मुद्रित तथा ई –37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित, संस्थापक संपादक :स्व. राधाकृष्ण चौधरी
प्रबंध संपादक : अरूण कुमार चौधरी, फोन: 9471170557/08084674042, ई-मेल : Divyadinkarranchi @ gmail.com,RNI Regd. No. : JHAHIN/2013/54373Postal Registration No. : RN-11/2012)

संक्षिप्त समाचार

ढाब थाना क्षेत्र में अवैध शराब से भरा हाईवा गढे में गिरा, 3773 बोतल शराब बरामद

कोडरमा विजय यादव

ढाब थाना क्षेत्र के चोराघाटी के पास अवैध शराब तस्करी की सूचना पर पुलिस ने वाहन चेकिंग अभियान चलाया। डोमचांच-सतगावां मार्ग पर एक हाईवा वाहन ने चेकिंग से बचने के प्रयास में यू-टर्न लिया और अनियंत्रित होकर गढे में गिर गया। जांच में वाहन से विभिन्न कंपनियों की 3773 पीस अवैध अंग्रेजी शराब बरामद हुई। पुलिस ने ढाब थाना कांड संख्या 03/25 दिनांक 20.05.2025 के तहत संबंधित धाराओं और उत्पाद अधिनियम में मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

क्षेत्र की समस्याओं को लेकर मिले मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की से। मौलाना अबुल कलाम आजाद

दिव्य संवाददाता

चान्हो - चान्हो पशुपालन कृषि मंत्री मांडर विधानसभा के विधायक से मंत्री बनने के बाद अबुल कलाम आजाद की पहली मुलाकात, गुलदस्ता देकर बधाई दी, क्षेत्र के बारे में मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की को अवगत कराया, मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने गांव के गरीब गुरबा और हर तरह के समस्याओं को निपटारा करने के लिए तैयार है, और मौलाना मुफ्ती गाजी सलाहुद्दीन ने भी अपने क्षेत्र के बारे में बात रखी उन को भी भरोसा दिलाया के निश्चित तौर पर जिस तरह का भी काम हो हम जरुर करेंगे, शिल्पी नेहा तिर्की ने यह कही कि वह क्षेत्र के विकास के लिए कटिबद्ध हैं। जल्द ही क्षेत्र में विकास की योजनाएं धरातल पर दिखेंगी। चुनाव के समय से ही वे कहते आ रहे हैं कि सिंचाई, सड़क व पेयजल उनकी प्राथमिकता में शामिल है। इसके अलावा निर्धन, गरीबों व असहाय के लिए वृद्धावस्था पेंशन व इन्दिरा आवास दिलाने के लिए प्रयासरत हैं।

मांडर. कार की चपेट में आकर सवा साल की बच्ची की मौत के मामले में गिरफ्तार चालक को पुलिस ने भेजा जेल

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - थाना क्षेत्र के महुआ जाड़ी गांव में मंगलवार की शाम को कार की चपेट में आकर सवा साल की एक बच्ची अयांशी तिग्गा की मौत के मामले में गिरफ्तार कार चालक अबुल हसन को मांडर पुलिस ने बुधवार को जेल भेज दिया. पुलिस के अनुसार वह कूड़ु के ककरगढ़ गांव का रहने वाला है. हादसे के बाद चालक को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था!

लखीसराय में नई नवेली दुल्हन का कारनामा, प्रेमी के साथ दो लाख नगदी सहित 70 ग्राम सोना लेकर हई फरार

13 दिन पहले हुई थी शादी, ससुराल वालों ने चार लोगों के विरुद्ध दर्ज कराई प्राथमिकी

पुलिस जांच में जुटी, जल्द होगी आरोपियों की गिरफ्तारी : थानाध्यक्ष

रंजीत विद्यार्थी

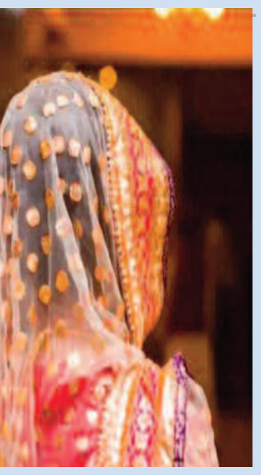

लखीसराय (मुंगेर) : मुंगेर प्रमंडल अंतर्गत लखीसराय जिला के रामचंद्रपुर गांव में एक नवविवाहिता अपने प्रेमी के साथ दो लाख रुपये और 70 ग्राम सोने के गहने लेकर फरार हो गई। जयराम सिंह ने इस सिलसिले में चार लोगों के खिलाफ पिपरिया थाने में शिकायत दर्ज कराई है. जिसमें दुल्हन के मामा और मौसा भी शामिल हैं। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। बताते चले की लखीसराय जिले के पिपरिया थाना क्षेत्र अंतर्गत रामचंद्रपुर गांव की एक नववधू अपने प्रेमी के साथ 70 ग्राम सोने की जेवरात और दो लाख रुपये नकद लेकर ससुराल से फरार हो गई है। जयराम सिंह ने इस घटना के संबंध में कुल चार लोगों के खिलाफ पिपरिया थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। थानाध्यक्ष उज्ज्वल कुमार ने बताया कि रामचंद्रपुर गांव के जयराम सिंह के पुत्र भोला कुमार उर्फ बादल की शादी बेगूसराय जिले के मटिहानी थाना क्षेत्र अंतर्गत जिला गांव के चमरू राय उर्फ पंकज राय की बेटी पूजा कुमारी के साथ गत सात मई को हुई।

मामा-मौसा पर भी दर्ज हुई केस

शादी के बाद दुल्हन ससुराल आ गई। यहां आने के बाद वह अपने मायके के प्रेमी चाक पुनर्वास गांव के पिंटू कुमार पुत्र पारो ठाकुर के साथ 70 ग्राम सोने की जेवरात एवं दो लाख नकद रुपये लेकर चंपत हो गई है। जयराम सिंह ने इस घटना के संबंध में वधू के मामा बेगूसराय के नावकोठी निवासी संतोष कुमार, मौसा रामचंद्रपुर निवासी दीपक कुमार, उनकी पत्नी प्रियंका कुमारी एवं प्रेमी पिंटू कुमार के खिलाफ पिपरिया थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है।

बोले थानाध्यक्ष

थानाध्यक्ष उज्ज्वल कुमार ने बताया कि जयराम सिंह के बयान पर नामजद केस दर्ज कर लिया गया है।

शहीद को श्रद्धांजलि, बुजुर्गों का आशीर्वाद : रूडी

प्रतिनिधिमंडल में विदेश दौरे से पूर्व सांसद रुडी का गरखा में शहीद के परिजनों से मुलाकात

दौरे से पूर्व बीएसएफ के शहीद सब-इंस्पेक्टर मोहम्मद इम्तियाज के घर पहुंचे रुडी, बिहार सरकार के मंत्री सह अमनौर विधायक श्री कृष्ण कुमार मंटू भी मौजूद।,शहीद के घर जाकर परिजनों को दी सांत्वना, बुजुर्गों से लिया आशीर्वाद, रुडी ने कहा, शहीदों के सम्मान से मिली ऊर्जा के साथ विदेश यात्रा पर होंगे रवाना,

ऑपरेशन सिंदूर के अंतर्गत सांसद रूडी सरकार के प्रतिनिधि के रूप में विदेश दौरे पर, भारत की आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति को वैश्विक मंच पर रखने की ऐतिहासिक पहल है प्रतिनिधिमंडल का दौरा, राष्ट्रीय एकता और सीमा पार आतंकवाद के विरुद्ध भारत के दृढ़ रुख का संदेश लेकर प्रतिनिधिमंडल होगा रवाना

गरखा । ऑपरेशन सिंदूरह्व के तहत भारत सरकार द्वारा गठित सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में मिस्र, कतर, इथियोपिया और दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर रवाना होने से पहले, सारण के सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री राजीव प्रताप रूडी ने आज गरखा प्रखंड के जलाल बसंत पंचायत स्थित नारायणपुर गांव का दौरा किया और सीमा सुरक्षा बल के शहीद सब-इंस्पेक्टर मोहम्मद इम्तियाज के परिजनों से मुलाकात की। शहीद के परिवार को ढांढस बंधाते हुए श्री रूडी ने कहा कि देश की रक्षा में बलिदान देने वाले वीर सपूतों का योगदान युगों तक स्मरणीय रहेगा। इस दौरान सांसद के साथ बिहार सरकार के मंत्री सह अमनौर विधायक कृष्ण कुमार मंटू, पूर्व विधायक मुनेश्वर चौधरी, पूर्व विधायक ज्ञानचंद मांझी, जदयू जिलाध्यक्ष अल्ताफ राजू, वैद्यनाथ प्रसाद विकल, जिला उपाध्यक्ष श्यामसुंदर प्रसाद, जिला प्रवक्ता संजय सिंह, पूर्व प्रदेश कार्यसमिति सदस्य राकेश सिंह, पूर्व मंडल अध्यक्ष हरेंद्र सिंह, महामंत्री निरंजन शर्मा भी मौजूद रहे। सांसद ने शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके बुजुर्गों से आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त किया। राजीव प्रताप रूडी ने कहा कि शहीद मोहम्मद इम्तियाज के प्रति यह श्रद्धांजलि न केवल एक सैनिक के सम्मान में है, बल्कि उन सभी परिवारों के प्रति आदर है, जिन्होंने अपने लाल देश के लिए समर्पित किए हैं। सांसद रूडी ने कहा कि शहीदों के सम्मान और उनके परिवारों की सेवा ही राष्ट्र सेवा का सर्वोच्च रूप है। मैं इस पुण्य कार्य से ऊर्जा लेकर ह्यऑपरेशन सिंदूरह्न के विदेश दौरे पर जा रहा हूँ, जहाँ भारत की आवाज को वैश्विक मंच पर और सशक्त बनाना है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार शहीदों और उनके परिवारों के सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। उन्होंने कहा कि विदेश यात्रा से पहले ऐसे पुण्य स्थल पर आकर मुझे नई ऊर्जा मिली है, जिसे लेकर मैं भारत की आवाज को और मजबूती से अंतरराष्ट्रीय मंचों पर रख सकूंगा। रुडी ने कहा कि प्रतिनिधिमंडल का विदेश दौरा भारत की एकजुटता, राष्ट्रीय संप्रभुता और आतंकवाद के सभी रूपों के खिलाफ दृढ़ प्रतिबद्धता को साझा करने का अवसर है। प्रतिनिधिमंडल के सदस्य भारत की सोच, संकल्प और नीति को स्पष्ट संदेश के रूप में अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने रखेंगे। मालूम हो कि प्रतिनिधिमंडल के इस दौरे का उद्देश्य भारत की आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति को वैश्विक मंचों पर स्पष्ट रूप से रखना है। यह यात्रा हाल ही में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले और सीमा पार आतंकवाद के विरुद्ध भारत की निरंतर लड़ाई का प्रतीक है।

मांडर विधानसभा कांग्रेस कमेटी की बैठक में संगठन सृजन-2025 और सरना धर्म कोड की मांग को लेकर रणनीति तय

राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि, 26 मई को राजभवन के समक्ष कांग्रेस का होगा धरना प्रदर्शन

मांडर- मांडर विधानसभा कांग्रेस कमेटी की एक महत्वपूर्ण बैठक बुधवार को मांडर में संपन्न हुई, जिसमें ह्लसंगठन सृजन-2025ह्व अभियान और अलग सरना धर्म कोड की मांग को लेकर आगामी 26 मई को राजभवन के समक्ष आयोजित होने वाले कांग्रेस पार्टी के धरना-प्रदर्शन कार्यक्रम को सफल बनाने की रणनीति पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक की शुरूआत पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न स्वर्गीय राजीव गांधी जी की पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर की गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता सह उप प्रमुख मुदस्सिर हक उपस्थित रहे। बैठक को संबोधित करते हुए मुदस्सिर हक ने कहा कि ह्लसंगठन सृजन-2025 अभियान के तहत कांग्रेस पार्टी को जमीनी स्तर पर पुनर्गठित कर, कार्यकताओं में नई ऊर्जा का संचार करना है। उन्होंने कार्यकताओं से अपील की कि वे कांग्रेस की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाएं और संगठन को मजबूती प्रदान करें। उन्होंने यह भी बताया कि 26 मई 2025 को पेसा कानून के प्रभावी क्रियान्वयन और अलग सरना धर्म कोड की मांग को लेकर राजभवन के समक्ष जोरदार धरना प्रदर्शन किया जाएगा। कार्यक्रम के तहत माननीय श्री बंधु तिर्की के निदेर्शानुसार दिनांक 26 मई को प्रातः 10:00 बजे मोराबादी स्थित उनके सरकारी आवास से लेकर राजभवन तक पैदल मार्च आयोजित किया जाएगा, जिसके बाद राज्यपाल को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा जाएगा। बैठक में मांडर प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष मंगा उरांव, बंधु टोप्पो, विनोद भगत, चमरा उरांव, नसीमा, अफसाना खातून, इरफान, समीम अख्तर, विकटोरिया टोप्पो, मनीष कच्छप, फूलमानी, सुरेश उरांव सहित अनेक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। अंत में मुदस्सिर हक ने ग्रामीणों और कार्यकताओं से इस आंदोलन में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील की।

निर्माण कारखाना एलएचबी कोच, मेट्रो एवं मेमू की सौगात लेकर आए रेल मंत्री - संघर्ष मोर्चा

वार्ता के लिए समय निर्धारित करे प्रशासन अन्यथा सड़कों पर उतरेंगे मोर्चा के नेता

दिव्य दिनकर जिला संवाददाता काजल गुप्ता

जमालपुर। आगामी शुक्रवार को रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव के आगमन के सुगबुगाहट के बीच रेल के सवालों को लेकर बरसों से संघर्षरत जमालपुर रेल निर्माण कारखाना संघर्ष मोर्चा में शामिल विभिन्न राजनीतिक तथा सामाजिक संगठनों के नेताओं की एक अति आवश्यक बैठक सीपीआई जिला सचिव संजीवन सिंह की अध्यक्षता में पूर्वी क्षेत्र नयागांव में आयोजित की गई। जिसमें रेल मंत्री के आगमन पर मोर्चा ने अपनी रणनीति तय की। और रेल मंत्री से निर्माण कारखाना, एलएचबी कोच, मेट्रो, मेमू एवं वाई-लेग की सौगात देने की मांग की। बैठक को संबोधित करते हुए बसपा के जिला प्रभारी कृष्णानंद राऊत, जाप के निवर्तमान जिला अध्यक्ष पप्पी उर्फ पप्पू यादव, लोहिया वाहिनी के प्रदेश महासचिव रविकांत झा, विकास मंच के जिला अध्यक्ष सुबोध तांती ने कहा कि जमालपुर रेल कारखाना सदैव से सरकार के कोप विभाजन का शिकार होता रहा है। एशिया महादेश के इस प्रथम कारखाना का जो विकास होना चाहिए, वह क्षेत्रीयतावाद की भेंट चढ़ गई। इस ऐतिहासिक रेल कारखाना को समाप्त करने की साजिश होने लगी। जिसे लेकर संघर्ष मोर्चा निरंतर संघर्षरत है। बावजूद, हमारी मांगों को दरकिनार किया जाता रहा है। इस बार रेलमंत्री के आगमन पर फिर मोर्चा की उम्मीद जगी है और मोर्चा रेलमंत्री को ज्ञापन सौंप अपने मांगों के तरफ अपना ध्यान आकर्षण कराएगी। वहीं, संघर्ष मोर्चा के संयोजक सह सपा जिलाध्यक्ष पप्पू यादव एवं मोर्चा के सह संयोजक जदयू के वरिष्ठ नेता कन्हैया सिंह ने कहा कि रेलमंत्री के आगमन को मोर्चा अपनी उपलब्धि मानती है और उम्मीद करती है कि रेलमंत्री जमालपुर कारखाना को निर्माण का दर्जा, कारखाना में एलएचबी कोच का निर्माण, जमालपुर रेल कारखाना एवं डीजल शेड को पूर्व मध्य रेलवे में शामिल करने के साथ ही वाई-लेग, मेट्रो व मेमू की सौगात देगी । अन्यथा विकास के नाम पर विधवा विलाप करने वाली केन्द्र सरकार की जनता के सामने पोल खुलना तय है। बैठक के अंत में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि जिला व रेलवे प्रशासन मोर्चा के नेताओं की ज्ञापन व वार्ता के लिए समय निर्धारित नहीं करती है तो मोर्चा घेराव के अपने पूर्व निर्णय पर अटल रहेगी। मौके पर सपा सह मोर्चा के मिडिया प्रभारी मनोज क्रांति, एनसीपी के उपाध्यक्ष दीपक साहू, प्रवक्ता नौशाद उस्मानी, युवा कांग्रेस नेता अभिताभ कश्यप सहित अन्य कार्यकर्ता शामिल थे।

रुडी ने गरखा में बीस सूत्री कार्यक्रम कार्यान्वयन समिति के नये कार्यालय का उद्घाटन किया

मंत्री कृष्ण कुमार मंटू, में पूर्व विधायक मुनेश्वर चौधरी, ज्ञानचंद मांझी उपस्थित थे।

जनप्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकताओं और राजनीतिक दलों की व्यापक भागीदारी

बीस सूत्री कार्यक्रमों के बेहतर संचालन हेतु कार्यालय अहम कदम

गरखा,। गरखा प्रखंड मुख्यालय में आज बीस सूत्री कार्यक्रम कार्यान्वयन समिति के नव-निर्मित कार्यालय का उद्घाटन एक गरिमामय समारोह के माध्यम ~~से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का~~ उद्घाटन सारण सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री राजीव प्रताप रूडी और बिहार सरकार में मंत्री कृष्ण कुमार मंटू ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता, स्थानीय नेता एवं प्रबुद्धजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पूर्व विधायक मुनेश्वर चौधरी, पूर्व विधायक ज्ञानचंद मांझी, जदयू जिलाध्यक्ष अल्ताफ राजू, लोजपा जिलाध्यक्ष दीपक सिंह, डॉ. संतोष प्रियदर्शी, हरेंद्र सिंह, श्री संजय सिंह, अजय मांझी, राहुल पास्वान, अल्पसंख्यक मोर्चा के अध्यक्ष नजरे इमाम, प्रखंड बीस सूत्री कार्यक्रम कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष सर्वेश्वर सिंह, उपाध्यक्ष अजय सिंह, धनंजय सिंह, अजय शर्मा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का आयोजन सुचारू और सशक्त प्रशासनिक समन्वय को ध्यान में रखते हुए किया गया, जिससे बीस सूत्री कार्यक्रमों की योजनाओं और कल्याणकारी नीतियों का स्थानीय स्तर पर प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित हो सके।

समाहरणालय परिसर में मनाया गया आतंकवाद विरोधी दिवस

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- गृह विभाग (विशेष शाखा) के निदेर्शानुसार एवं जिला पदाधिकारी श्री श्रीकांत शास्त्री के मार्गदर्शन में समाहरणालय परिसर, औरंगाबाद में आतंकवाद विरोधी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर समाहरणालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा शपथ ली गई कि वे भारत की अहिंसा एवं सहनशीलता की परंपरा में अटूट विश्वास रखते हुए सभी प्रकार के आतंकवाद और हिंसा का दृढ़ता से विरोध करेंगे। साथ ही, वे समाज के सभी वर्गों के बीच शांति, सामाजिक सद्भाव और आपसी समझ बनाए रखने तथा मानव मूल्यों को खतरा पहुंचाने वाली विघटनकारी शक्तियों से संघर्ष करने के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे। कार्यक्रम में जिला भू-अर्जन पदाधिकारी श्री सच्चिदानंद सुमन, जिला पंचायत राज पदाधिकारी श्री इफ्तेखार अहमद, जिला उप निर्वाचन पदाधिकारी श्री मोहम्मद गजाली, सहित अन्य जिला स्तरीय पदाधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

ऐतिहासिक रेल कारखाना में वर्कलोड बढ़ाने तथा कारखाना के विकास को लेकर राजद केंद्रीय रेल मंत्री के समक्ष रखेगी मांग

जमालपुर। रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव के संभावित जमालपुर आगमन पर राष्ट्रीय जनता दल बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के तत्वाधान में बुधवार को दौलतपुर दुर्गास्थान परिसर में एक आपातकालीन बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष राजेश रमण उर्फ राजू यादव एवं संचालन छात्र प्रखंड अध्यक्ष विमल यादव ने किया। बैठक में मुख्य रूप से जमालपुर कारखाना और रेल से जुड़े मामलों पर चर्चा हुई। राजद बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष राजेश रमण ने कहा कि एशिया का प्रथम रेल कारखाना जमालपुर, जो विकास की गति से बहुत नीचे चला गया है उसको गति देकर आगे बढ़ाना है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के साथ मिलकर हम लोग अपनी बात को रखेंगे। जिसमें मुख्य रूप से एक्ट अप्रेंटिस छात्र को सीधे तौर पर रेलवे में नियुक्ति, जमालपुर कारखाना को निर्माण कारखाना घोषित करते हुए वर्कलोड को बढ़ाने, डीजल शेड को पूर्ण रूप से इलेक्ट्रिक शेड में परिणत करने, जमालपुर में जल्द से जल्द रेल विश्वविद्यालय के निर्माण, मुख्य अस्पताल जमालपुर को सुपर स्पेशलिटी का दर्जा दिया जाने, जमालपुर जुबली वेल से रेलवे 6 नंबर गेट की सड़कों का चौड़ीकरण करने, जमालपुर रेलवे स्टेशन में प्रवेश के लिए ईस्ट कॉलोनी के तरफ एवं जुबली वेल की तरफ प्रवेश द्वारा दिए जाने, सभी रेल कॉलोनी की चारदीवारी करते हुए क्वार्टर का मरम्मत कराया जाने एवं खाली पड़े जमीन पर स्टाल बनाकर बेरोजगार युवकों को भाड़े पर दिया जाने, दौलतपुर वाई-लेग पर न्यू जमालपुर हॉल्ट एवं सफियाबाद हाल्ट का निर्माण कराई जाने की मांग शामिल है। मौके पर उपस्थित बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के मंतोष कुमार, शनिचर मंडल, राम मंडल उर्फ गुड्डु, मंटू तांती, अनिल कुमार, अरुण तांती, निर्मल कुमार तांती, राहुल कुमार उर्फ करेली, चंदन चौहान, राहुल सिंह, श्याम कुमार सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

संक्षिप्त समाचार

पूर्व जीप अध्यक्ष ने पथ निर्माण मंत्री के फ्लाई ओवर की घोषणा का ध्यान आकृष्ट कराया

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला परिषद औरंगाबाद के पूर्व अध्यक्ष राघवेंद्र प्रताप नारायण सिंह ने बिहार सरकार के पथ निर्माण मंत्री माननीय नितिन नवीन जी से औरंगाबाद नगर परिषद क्षेत्र के निमार्णाधीन कलेक्ट्रेट से लेकर रमेश चौक तक फ्लाई ओवर की मांग के संबंध में एक बार फिर उन्हें याद दिलाते हुए पत्र प्रेषित किया है। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री आदरणीय सत्येंद्र नारायण सिंहा जी के प्रतिमा अनावरण के समय पहुंचे माननीय मंत्री को इस संबंध में पत्र प्रेषित किया था माननीय मंत्री द्वारा समारोह के मंच से यह घोषणा की गई थी कि औरंगाबाद में फ्लाईओवर का निर्माण जल्द कराया जाएगा।उनकी घोषणा के बावजूद भी फ्लाईओवर के कार्य में कोई प्रगति नहीं हुई है।औरंगाबाद की जनता वर्षों से प्रतीक्षा में है कि कब उन्हें आए दिन होने वाले जाम से निजात मिल सके औरंगाबाद नगर परिषद क्षेत्र में घंटो जाम की स्थिति बनी रहती है।खासकर लग्न त्यौहार के मौसम में विशेष कर जामा मस्जिद के पास तो प्रतिदिन जाम से जरूर मुलाकात हो जाती है। औरंगाबाद के जनता की ओर से मैं माननीय मंत्री जी का ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूं जितना जल्द हो सके कि फ्लाई ओवर बनवाने की दिशा में अग्रतर कार्रवाई करवाना चाहेंगे जिससे लोगों को प्रदूषण से मुक्ति भी मिले और जाम से निजात भी मिल सके।

सेवाकालीन बकाया वेतन के लिए दर-दर भटक रहे हैं अवकाश प्राप्त प्रोफेसर डॉ रामाधार सिंह

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला मुख्यालय औरंगाबाद की उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थान सच्चिदानंद सिंहा महाविद्यालय के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर डॉ रामाधार सिंह ने सेवानिवृत्ति के पश्चात सेवा काल में वेतन संबंधी संघर्षपूर्ण परेशानियों को प्रेस ब्यान जारी कर कहा कि 5 जनवरी 1977 को मगध विश्वविद्यालय बोधगया के अंतर्गत दाउदनगर कॉलेज दाउदनगर में मुझे भूगोल विभाग के व्याख्याता के पद पर माननीय कुलाधिपति के परिनियम के आलोक नियुक्ति हुई ।मगध विश्वविद्यालय के पत्रांक 1205/जी/ 17-03-1983 के आलोक में मेरी सेवा को नियुक्ति के समय से ही स्थाईकरण किया गया। मगध विश्वविद्यालय के ज्ञापांक जी1/94/99/10-06-99 के आधार पर मेरी सेवा संपुष्टि दिनांक 5-1-77 ही है। 10 वर्षीय काल वृद्धि प्रोन्नति के अनुसार मेरी प्रोन्नति उपाचार्य के पद पर हो गया है। सरकार द्वारा मेरा वेतन निर्धारित हो गया है।सिंहा कालेज औरंगाबाद में भूगोल विभाग के सफल संचालन एवं अध्यापन के लिए सरकार द्वारा स्थाई शिक्षक के रूप में दाउदनगर महाविद्यालय से सिंहा कॉलेज औरंगाबाद में मगध विश्वविद्यालय के पत्रांक 1806/जी/28-10-91 द्वारा स्थानांतरण भी किया गया दिनांक 06/11/91 से सिंहा कॉलेज औरंगाबाद में योगदान करके सफलता पूर्वक भूगोल विभाग का संचालन करता रहा और मैं 2014 में सेवानिवृत हो गया हूं मेरे पढ़ने एवं लेखन शैली कार्यक्षमता,सादगी व्यवहार कर्तव्य निष्ठा एवं उद्बोधन क्षमता के संबंध में पूर्व प्राचार्य,जिला के विभिन्न संगठन,राज्य एवं भारतीय भूगोल कांग्रेस परिषद द्वारा अनेक बार मुझे सम्मानित भी किया गया है। पूर्व प्राचार्य के द्वारा 2002 से लेकर 2009 तक मुझे 80% वेतन प्राप्त होता रहा है। पूर्व प्राचार्य एवं विश्वविद्यालय प्रशासन के लापरवाही के कारण मुझे सेवाकाल में पूर्ण वेतन कभी भी प्राप्त नहीं हुआ जबकि मेरा पूर्ण वेतन हमेशा विश्वविद्यालय के द्वारा कॉलेज को भेजा जाता था जिसका प्रमाण पूर्व प्राचार्य के पत्र से स्पष्ट होता है पूर्ण वेतन भुगतान के संबंध में हमेशा पूर्व प्राचार्य , विश्वविद्यालय प्रशासन को सूचित करता रहा हूं।पूर्ण वेतन भुगतान नहीं होने में लाचार होकर मुझे माननीय उच्च न्यायालय पटना जाना पड़ा।वेतन भुगतान के संबंध में माननीय उच्च न्यायालय का भी आदेश दिनांक 25 जून 2019 को कॉलेज को प्राप्त हो गया है। जिसकी सूचना मैं वर्तमान प्राचार्य डॉ सुधीर कुमार मिश्रा जी को दे चुका हूं वेतन भुगतान के संबंध में मैं वर्तमान प्राचार्य एवं लेखापाल मनोज कुमार सिंह को बार बार ध्यान भी आकृष्ट कराया लेकिन अभी तक मेरा पूर्ण वेतन भुगतान 9% सूद के साथ नहीं हुआ है मेरा वर्तमान उम्र 76 वर्ष हो गया है मैं एवं मेरी पत्नी हमेशा अस्वस्थ रहने के कारण मुझे चिकित्सा की आवश्यकता है। आर्थिक तंगी से मैं गुजर रहा हूं। प्रेस के माध्यम से मुझे न्याय दिलाया जाए।

ट्रैक्टर और मोटरसाइकिल के टक्कर में दो युवक घायल

दिव्य दिनकर संवाददाता संग्रामपुर।

बुधवार की संध्या लगभग 5:30 बजे संग्रामपुर गंगटा मुख्य मार्ग के छाता लश्करा गांव के समीप ट्रैक्टर और मोटरसाइकिल के आमने सामने के टक्कर में दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गया परिजनों एवं स्थानीय ग्रामीणों के द्वारा दोनों युवकों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र संग्रामपुर लाया गया जहां चिकित्सकों के द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए भागलपुर रेफर कर दिया गया दुर्घटना में घायल युवक का पहचान टेटिया बम्बर थाना क्षेत्र के भलगुड़ी गाँव निवासी रौशन कुमार पिता योगेन्द्र यादव और छाता गाँव निवासी सूरज कुमार पिता रंजय कुमार सामिल हैं। परिजनों ने बताया कि घर से संग्रामपुर बाजार आ रहा था तभी छाता मोड़ के समीप विपरीत दिशा से ट्रैक्टर ने सामने से टक्कर मार दी जिसमें दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गया।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के जमालपुर आगमन को लेकर मंत्रालय ने जारी किया शेड्यूल

दिव्य दिनकर (पवन कुमार चौधरी)

जमालपुर। विगत करीब एक महीने से केंद्रीय रेलमंत्री के जमालपुर आगमन को लेकर मची उहापोह की स्थिति अब समाप्त होने वाली है। रेलमंत्री के बिहार दौरे को लेकर मंत्रालय की ओर से शेड्यूल जारी कर दिया गया है। इसको लेकर करीब एक महीने में दो बार शेड्यूल को रद्द किया जा चुका है। ऐतिहासिक रेल इंजन कारखाना जमालपुर में रेलमंत्री के आगमन से पहले आधिकारिक स्तर पर बैठकों का दौर शुरू है। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के जमालपुर आगमन की आधिकारिक सूचना जारी होते ही जमालपुर रेलवे स्टेशन से लेकर रेलवे ईस्ट कॉलोनी क्षेत्र में कारखाना मार्ग एवं आसपास के इलाकों में साफ सफाई तथा मेंटेनेंस का कार्य तेजी से कराया जा रहा है। रेलवे द्वारा जारी शेड्यूल के मुताबिक रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव गुरुवार 22 मई को नई दिल्ली से स्पाइस जेट से रात्रि 9:00 बजे पटना के लिए उड़ान भरेंगे और रात्रि 11:00 बजे पटना पहुंचकर विश्राम करेंगे। शुक्रवार 23 मई को सुबह करीब 8:30 बजे पटना से विशेष ट्रेन से जमालपुर के लिए रवाना होंगे। रेलमंत्री पटना-किऊल-जमालपुर रेलखंड पर विंडो निरीक्षण करते हुए दिन में करीब 11:00 बजे जमालपुर पहुंचेंगे।

रेल इंजन कारखाना में नई योजनाओं को रेलमंत्री दे सकते हैं मंजूरी

शुक्रवार को रेल नगरी जमालपुर में विशेष दौरे पर पहुंच रहे केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव एशिया प्रसिद्ध रेल इंजन कारखाना को नई योजनाओं का सौगात दे सकते हैं। रेल इंजन कारखाना जमालपुर को निर्माण कारखाना का दर्जा दिए जाने को लेकर विगत करीब दो दशक से सामाजिक तथा राजनीतिक संगठनों के द्वारा मांग उठाई जाती रही है। स्थानीय मांगो पर विचार करते हुए रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव जमालपुर रेल कारखाना को निर्माण कारखाना का दर्जा देने के साथ-साथ जमालपुर में मेट्रो ट्रेन के निर्माण को लेकर भी घोषणा कर सकते हैं।

विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों के द्वारा रेल मंत्री को सौंपा जाएगा ज्ञापन

रेल इंजन कारखाना जमालपुर के विकास को लेकर वर्षों से मांग उठा रहे विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों की ओर से रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव के समक्ष अपनी मांगों को रखने के लिए तैयारी की जा चुकी है। बिहार की विपक्षी पार्टी राष्ट्रीय जनता दल की ओर से बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के मुंगेर जिला अध्यक्ष राजेश रमण उर्फ राजू यादव की अगवाई में राजद नेताओं का प्रतिनिधि मंडल रेल मंत्री से मुलाकात कर अपनी मांगों को रखेंगे। वहीं, रेल निर्माण कारखाना संघर्ष मोर्चा की ओर से सपा जिलाध्यक्ष पप्पू यादव की अगवाई में मोर्चा के पदाधिकारी अपनी ओर से रेलमंत्री को मांग पत्र सौंपेंगे। इसके अलावा ऑल इंडिया रेलवे पैसेंजर्स एसोशिएशन की ओर से तथा ऑल इंडिया रेलवे एक्ट अप्रेंटिस एसोशिएशन की ओर से अलग-अलग प्रतिनिधि मंडल रेल मंत्री से मुलाकात कर रेलवे से जुड़े मुद्दों पर एक मांग पत्र रेल मंत्री को सौंपेगा।

तारापुर विधायक राजीव कुमार सिंह साक्ष्य के अभाव में रिहा

विशेष न्यायाधीश एमपी व एमएलए कोर्ट ने दिया निर्णय

ओमप्रकाश पोद्दार

मुंगेर कोर्ट : विशेष न्यायाधीश एमपी व एमएलए कुमार पंकज ने तारापुर थाना कांड संख्या 47/2014 के अभियुक्त एवं वर्तमान में तारापुर के विधायक राजीव कुमार सिंह को साक्ष्य के अभाव में रिहा किया। विधायक के विरुद्ध 3/4 लोक संपत्ति नुकसान निवारण अधिनियम 1984 के अन्तर्गत विचारण किया गया था । इस मामले में 8 साश्रियों का साक्ष्य कराया गया एवं 3 अगस्त 2024 को अभियोग सुनाया गया था। इस मामले में चौकीदार जयरामपासवान के बयान पर 3/4 विस्फोट पदार्थ अधिनियम के तहत अज्ञात के विरुद्ध में 21 अप्रैल 2014 को तारापुर थाना में प्राथमिकी दर्ज हुआ था लेकिन, अनुसंधानकर्ता ने रजीव कुमार सिंह के विरुद्ध मे धारा 3/4 लोक संपत्ति नुकसान निवारण अधिनियम 1984 के तहत आरोप पत्र न्यायालय में दाखिल किया था। बताते चलें कि 24 अप्रैल 2014 को राजीव कुमार सिंह के मकान के सामने सड़क उत्तर भाग में इन्डोफटीर्नाइजर कॉरपोरेशन के खाली पड़ी गोदाम में जबरदस्त बम विस्फोट हुआ था ।इस विस्फोटक में गोदाम के दरवाजे कई फीट दुर जा कर गिरा वह दीवार टुट गई। गोदाम में ताला राजीव कुमार सिंह का लगा था। पुलिस ने घटनास्थल से जला हुआ सुतरी का टुकड़ा, लोहा का टुकड़ा बरामद किया था तथा घटनास्थल पर बारुद का गंध था। इस मामले मे राजीव कुमार सिंह को 26 जून 2015 को पटना हाईकोर्ट से जमानत मिला था। बुधवार को एमपी व एमएलए के विशेष न्यायाधीश कुमार पंकज के न्यायालय से तारापुर विधायक राजीव कुमार सिंह को साक्ष्य के अभाव में रिहा किया। इसके पूर्व 3 मई 2025 को पूर्व विधायक अनंत कुमार सिंह को साक्ष्य के अभाव मे रिहा किया गया था।

नक्सलवाद को करारा झटका दिया पुलिस ने आतंकवाद विरोधी दिवस के दिन कुख्यात नक्सली शिवकुमार गिरफ्तार

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले में पुलिस और स्पेशल टास्क फोर्स (STF) की संयुक्त कार्रवाई ने नक्सल मोर्चे पर एक बड़ी सफलता हासिल की है। वर्षों से फरार चल रहा कुख्यात नक्सली शिवकुमार सिंह, जो कई नक्सली घटनाओं का वांछित आरोपी था, आखिरकार पुलिस के हत्थे चढ़ गया। 20 मई 2025 को गुप्त सूचना के आधार पर मदनपुर थाना क्षेत्र के ग्राम निमीडीह में घेराबंदी कर पुलिस व STF की संयुक्त टीम ने जबरदस्त छापेमारी कर शिवकुमार को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार होने के बाद नक्सली ने अपने जुर्म कबूल कर लिए हैं। उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। विस्फोट, आगजनी और सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाला अपराधी गिरफ्तार नक्सली शिवकुमार सिंह ने साल 2014 में मदनपुर ब्लॉक परिसर और अंचल पुलिस निरीक्षक कार्यालय पर हमला कर वहां तोड़फोड़, विस्फोट और आगजनी की थी। इसके खिलाफ कई संगीन धाराओं में केस दर्ज थे। अपराधिक का इतिहास कांड संख्या 133/14 धारा 147, 148, 149, 341, 323, 337, 504, 353 IPC व 17 CLA एक्ट कांड संख्या 134/14 वही धाराएं, अगला ही दिन साफ दशार्ता है कि शिवकुमार इलाके में लगातार दहशत फैलाता रहा। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में चला अभियानः इस सफलता से स्पष्ट है कि औरंगाबाद पुलिस नक्सली गतिविधियों पर पूरी तरह लगाम कसने को तैयार है। पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में STF और स्थानीय पुलिस की संयुक्त कार्रवाइयों से नक्सलियों का मनोबल लगातार टूटता जा रहा है। सूत्रों का कहना है कि आगे भी ऐसे फरार नक्सलियों के खिलाफ कार्रवाई जारी रहेगी। औरंगाबाद एक बार फिर शांति और विकास की राह पर लौटता दिख रहा है।

रोहतास, कैमूर, भोजपुर, वैशाली एवं नालान्दा के तर्ज पर औरंगाबाद जिले का नाम देव किया जाये

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जनेश्वर विकास केंद्र के द्वारा अधिवक्ता संघ भवन में प्रेस वार्ता आयोजित हुई। प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए सचिव सिद्धेश्वर विद्यार्थी ने बताया कि यह प्रेस वार्ता औरंगाबाद जिला का नाम देव धाम नाम करवाने की मांग को लेकर रखा गया है। आगे उन्होंने बताया कि जिस तरह कुछ दिन पहले गया का नाम अब गयाजी के नाम से कर दिया गया पूरे मगध के लिए हर्ष का बात है, वहां के जनप्रतिनिधियों को धन्यवाद देता हूं। और माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी को आभार व्यक्त करता हूं बिहार के लगभग सभी जिले वहां के इतिहासों के नाम से ही जुड़ा हुआ है, यदि रोहतास जिले की बात हो तो यह भी रोहतास किले की इतिहास से जुड़ा हुआ नाम है जबकि रोहतास का हेड क्वार्टर सासाराम है, पर्वत श्रृंखला के नाम जिले का नाम कैमूर रखा गया है जबकि जिला मुख्यालय भभुआ है, राजा भोज के नाम पर जिले का नाम भोजपुर जिला है जो इतिहास से जुड़ा हुआ है जबकि हेड क्वार्टर आरा है, इसी तरह वैशाली और नालंदाका नाम भी ऐतिहासिक जगह के नाम पर रखा गया है जबकि इसका मुख्यालय क्रमशः हाजीपुर और विहार शरीफ हैं। इसका जीता जागता उदाहरण इसी जिला में विद्यमान है जहां ऐतिहासिक गढ़ होने के कारण प्रखंड का नाम कुटचम्बा है जबकि मुख्यालय अंबा में है । इसी तरह औरंगाबाद के ऐतिहासिक प्राचीन मंदिर देव सूर्य मंदिर के इतिहासों से औरंगाबाद का नाम जोड़ा जाए और औरंगाबाद का भी नाम देव धाम किया जाए। इसके लिए हम लोग बिहार सरकार कि माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मांग करते हैं। समाजसेवी आदित्य श्रीवास्तव ने गया को गयाजी नाम से जुड़े जाने पर पूरे मगध वासियों बधाई एवं शुभकामनाएं दी है उन्होंने यह बताया कि यह पूरे मगध की लिए गौरव का पल है यहां प्रभु श्री राम ने अपने पिता का पिंडदान दिया अब गया अपने पुराना नाम से नहीं गयाजी के नाम से जाना जाएगा, इस तरह हम सभी मांग करते हैं औरंगाबाद शहर को भी इतिहासों के तथ्य पर नाम जोड़ा जाए जो कि देव सूर्य मंदिर की इतिहासों के साथ शहर का नाम जोड़कर देवधाम या देव रखा जाए ताकि प्राचीन सूर्य मंदिर की इतिहास का प्रचार प्रसार का बढ़ावा मिल सके देव सूर्य मंदिर पूरी एशिया का सबसे प्राचीन मंदिर है सभी जिले अपने इतिहासों के साथ जुड़े हुए नाम से ही हैं। औरंगाबाद जिले के साथी मतभेद क्यों औरंगजेब के नाम पर यह जिले का नाम सही नहीं है औरंगजेब के इतिहासों से औरंगाबाद का इतिहास नहीं है इसका इतिहास प्राचीन सूर्य मंदिर से जुड़ा हुआ है इसलिए देव नाम से औरंगाबाद को जोड़ा जाए यह मांग हम लोग माननीय मुख्यमंत्री से करते हैं और जनप्रतिनिधियों से भी इसकी और ध्यान सरकार को आकर्षित करने का काम करें।

खेलो इंडिया यूथ गेम्स में दो रजत पदक जीतने वाले प्रिंस कुमार को समाजसेवी डॉ0 प्रकाश चंद्रा ने दी बधाई

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद - खेलो इंडिया यूथ गेम्स में दो रजत पदक जीतने वाले औरंगाबाद के लाल प्रिंस कुमार जी को डॉ० प्रकाश चंद्रा ने दी बधाई। साथ हीं हर संभव सहयोग दिया वचन! बिहार में चल रहे सातवें खेलो इंडिया यूथ गेम्स में औरंगाबाद के लाल प्रिंस कुमार ने एथलेटिक्स (दौड़) प्रतियोगिता में दो रजत पदक हासिल किया है। भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी, दाउदनगर के सचिव, राष्ट्रीय वैश्य महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष, 'हैंड्स ऑफ प्रकाश चन्द्रा' के संरक्षक एवं लोजपा (रामविलास) के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ प्रकाश चन्द्रा और प्रिंस कुमार की औरंगाबाद समाहरणालय में मुलाकात हुई। इस मुलाकात के दौरान प्रकाश चंद्रा ने युवा एथलीट प्रिंस कुमार जो उनकी इस उपलब्धि पर बधाई दी और कहा कि, हमारे भाई प्रिंस कुमार ने रजत पदक जीत कर संपूर्ण जिले और राज्य का नाम रौशन किया है। हमें हमारे युवा साथी पर गर्व है। एथेलेटिक्स के क्षेत्र में प्रिंस जी नित्य नई बुलंदियों को छुएं यही ईश्वर से प्रार्थना है। हम लोग सदैव उनके सहयोग के लिए तत्पर रहेंगे।

सेवानिवृत सैन्य अधिकारी कर्नल रोहित चौधरी की अगुवाई में 24 से 31 मई तक जय हिंद सभा का होगा आयोजन

दिव्य दिनकर (पवन कुमार चौधरी)

मुंगेर। पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान के खिलाफ भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर चला कर एक बार फिर दुनिया के सामने भारत की मजबूत सैन्य व्यवस्था और भारतीय सेना के शौर्य व पराक्रम का परिचय दिया है। भारतीय सेना ने वीरता के साथ लड़ाई लड़कर जो भारत के आम नागरिकों की सुरक्षा की है, उस वीरता के लिए कांग्रेस पार्टी भारतीय सेना को देश की जनता की तरफ से सलाम करती है। लेकिन, जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की पूरी घटना पर से पर्दा नहीं हटाया गया है। भारत की आम जनता जानना चाहती है कि आखिरकार जम्मू कश्मीर जैसे संवेदनशील इलाके में खासकर पर्यटक क्षेत्र में जहां चारों तरफ केंद्रीय पुलिस बल की तैनाती हुआ करती है। पहलगाम अटैक के दिन आखिरकार उक्त क्षेत्र से केंद्रीय सुरक्षा बल क्यों हटा लिए गए। आखिरकार केंद्र सरकार पहलगाम अटैक मामले की पूरी घटना पर पर्दा क्यों डालना चाह रही है? इन सवालों को लेकर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर सेवानिवृत सैन्य आधिकारिक कर्नल रोहित चौधरी के नेतृत्व में देश के कई क्षेत्रों में ₹जय हिंद सभा₹ का आयोजन कर जनता के बीच पहुंचेगी और जनता के साथ मिलकर इन सवालों पर केंद्र सरकार से जवाब मांगेगी। उक्त जानकारी देते हुए बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी सोशल मीडिया प्रकोष्ठ की प्रदेश सचिव मानसी कुमारी ने कहा कि आगामी 24 मई से 31 मई के बीच कांग्रेस पार्टी कर्नल रोहित चौधरी की अगुवाई में प्रथम चरण में देश के 16 शहरों में ₹जय हिंद सभा₹ करेगी। इन सभाओं में हमारे सैनिकों की वीरता को नमन किया जाएगा। सभा के माध्यम से आम जनता के सहयोग से केंद्र की मोदी सरकार से अनुरोध किया जाएगा कि वह लोगों को बताए कि पहलगाम हमला कैसे हुआ और हमने कैसे 'ऑपरेशन सिंदूर' लॉन्च किया? आम जनता के साथ मिलकर इस सवाल का भी जवाब केंद्र सरकार से मांगा जाएगा कि आखिरकार चारों तरफ से सुरक्षा व्यवस्था से लैस पहलगाम जैसे पर्यटक क्षेत्र में सुरक्षा घेर को भेदते हुए आतंकवादी कैसे प्रवेश करते हैं ? सरकार से यह भी पूछा जाएगा कि जिस वक्त पहलगाम में आतंकवादी पर्यटकों को चुन-चुन कर मार रहे थे, उक्त समय में कोई भी सुरक्षा बल पर्यटकों की जान बचाने के लिए आखिरकार क्यों नहीं पहुंच पाया? सरकार से पूछे जाने वाले सवालों में तीसरे महत्वपूर्ण सवाल के रूप में रखा जाएगा कि डिजिटल इंडिया की इस दौड़ में भी उन आतंकवादियों की एक भी तस्वीर क्यों नहीं उपलब्ध हो पाई है? सवालों की इस कड़ी में सबसे आखरी और महत्वपूर्ण सवाल सरकार से यह भी पूछा जाएगा कि पहलगाम में आतंकी घटना को अंजाम देने के उपरांत ये आतंकवादी आखिरकार किस सुरक्षित रास्ते का प्रयोग कर वहां से निकल गए? कांग्रेस सोशल मीडिया प्रकोष्ठ के नेता सुरेश यादव ने कहा कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के द्वारा पहले चरण के तहत 16 शहरों में चलाई जाने वाले जय हिंद सभा के माध्यम से केंद्र सरकार से पूछे गए सवालों का जवाब नहीं मिलने पर पार्टी अगले चरण में देश के अन्य हिस्सों में भी ₹जय हिंद सभा₹ का आयोजन करेगी। या सिलसिला तब तक जारी रहेगा जब तक की सरकार ओम जनता के इन सवालों का जवाब नहीं दे देती है।

कांग्रेस विधानसभा प्रभारी प्रज्ञा सिंह की मौजूदगी में मनाया गया पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी का बलिदान दिवस

कांग्रेस विधानसभा प्रभारी प्रज्ञा सिंह की मौजूदगी में मनाया गया पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी का बलिदान दिवस

दिव्य दिनकर जिला संवाददाता काजल गुप्ता

मुंगेर। जिला कांग्रेस मुख्यालय तिलक मैदान मुंगेर में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न स्वर्गीय राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर बलिदान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कांग्रेस नेता मो शकील अहमद की अध्यक्षता में तथा संचालन भारतीय कांग्रेस सेवा दल के उत्तर प्रदेश इकाई के प्रभारी प्रो डॉ देवराज सुमन ने किया। कार्यक्रम के आरंभ में कांग्रेस नेताओं ने भारत रत्न स्वर्गीय राजीव गांधी के तैलीय चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित किया। कार्यकताओं को संबोधित करते हुए प्रो डॉ देवराज सुमन ने कहा कि स्वर्गीय राजीव गांधी के शासन काल में ही दूर संचार क्रांति का आगाज हुआ। इस क्रांति का ही परिणाम है कि हम भारतवासी अपनी रोज मर्रा की जिंदगी में इस क्रांति का भरपूर लाभ पा रहे है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मो शकील अहमद ने कहा कि राजीव गांधी के शासन काल में देश की राजनीति में जोड़ने के लिए युवा वर्ग को 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष की आयु में मतदान करने का अधिकार दिया। इस दौरान जिला कांग्रेस सेवादल जिला अध्यक्ष चंदन कुमार सिंह के द्वारा तीन स्वयं सेवकों को सेवादल की विधिवत सदस्यता ग्रहण करवाई गई और दो जोनल पदाधिकारी को अंग वस्त्र से सम्मानित किया गया। मौके पर मौजूद कार्यालय सचिव रमाशंकर सिंह, अजीत मालाकार, ओम प्रकाश शाह, ब्रह्मदेव चौरसिया, राजकुमार मंडल ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के योगदानों पर चर्चा किया। वहीं, जमालपुर नगर कांग्रेस कमेटी के तत्वावधान

में मारवाड़ी धर्मशाला परिसर में कांग्रेस कार्यकताओं ने पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के तैलीय चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित किया। मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से नियुक्त जमालपुर विधानसभा प्रभारी प्रज्ञा फिलिप्स ने भारत रत्न राजीव गांधी के योगदानों को याद करते हुए कहा कि राजीव गांधी द्वारा ग्राम पंचायतों को दिए गए अधिकार और विकास योजनाएं आज भी सफल हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष कमलेश्वरी मंडल ने कहा कि आज जनता से जुड़ी योजनाओं का लाभ शत प्रतिशत जनता तक पहुंचाने की दिशा में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने जो व्यवस्था बनाई उसी के आधार पर आज योजनाओं का लाभ सीधे आम जनता तक पहुंच रहा है। उधर, धरहरा प्रखंड में पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न से सम्मानित स्वर्गीय राजीव गांधी जी का पुण्यतिथि कार्यक्रम मोहनपुर में आयोजित किया गया। पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी के पुण्यतिथि पर जमालपुर विधानसभा प्रभारी प्रज्ञा ने धरहरा प्रखंड के विभिन्न गांव का दौरा कर कांग्रेस पार्टी की बैठक का जन संवाद कार्यक्रम चलाया। इस दौरान प्रभारी प्रज्ञा ने कांग्रेस संगठन को हर पंचायत में मजबूत करने की बात कही। उन्होंने माताडीह, सारोबाग, ईटवा, अमारी, औड़ाबगीचा तथा धरहरा दक्षिण पंचायत में जाकर कांग्रेस कार्यकर्ता सहित आमजनों से मिलकर जमालपुर विधानसभा क्षेत्र के वर्तमान कांग्रेस के विधायक डॉ अजय कुमार सिंह के चार वर्षों के कार्यकाल की जानकारी ली। उन्होंने आमजनों से मिलकर वर्तमान विधायक के द्वारा किए गए कार्यों की भी जानकारी ली। साथ ही, जनता के बीच कांग्रेस के वर्तमान विधायक की क्षवि कैसी है, इससे भी अवगत हुई। इस दौरान ईटवा में युवा जिलाध्यक्ष अनुप राज उर्फ बिस्टू सिंह के आवास पर बैठक की गई। तथा आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर रणनीति तैयार की गई। वहीं ईटवा में संजय मिश्रा ने जमालपुर विधानसभा प्रभारी प्रज्ञा सिंह को अंगवस्त्र भेंटकर उनका स्वागत किया। मौके पर अशोक कुमार चौधरी, नंद कुमार साव, छोटू मिश्रा, अमर मिश्रा सहित दर्जनों कांग्रेसी मुख्य रूप से उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

मान कुमारी बद्रीनारायण सरस्वती शिशु मंदिर के दसवीं के सीबीएसई में सभी विद्यार्थी सफल

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर के मान कुमारी बद्रीनारायण सरस्वती शिशु मंदिर के विद्यार्थियों ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा 10वीं के परीक्षा का परिणाम घोषित होने पर विद्यालय का परिणाम शत प्रतिशत सफल रहा। सभी विद्यार्थियों ने परीक्षा में उत्तीर्णता हासिल की। विद्यालय के प्रधानाचार्य परशुराम ओझा एवं विद्यालय प्रबंध समिति के पदाधिकारी अविनाश कुमार सिंह उर्फ बब्लू बाबू ने बताया कि पिछले दो-तीन वर्षों से लगातार इस विद्यालय द्वारा दसवीं की परीक्षा में सभी विद्यार्थी बेहतरीन परिणाम लाकर विद्यालय का नाम रौशन कर रहे हैं साथ ही साथ ग्राम जम्होर के लोग भी गौरवान्वित हैं कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में विद्यालय द्वारा जिस तरह की शिक्षा दी जा रही है वह आने वाले भविष्य में एक मील का पत्थर साबित होगा।

अरुणा देवी हत्याकांड का पुलिस ने किया सनसनीखेज खुलासा

प्रेम प्रसंग बना मौत की वजह

दिव्य दिनकर संवाददाता तारापुर

टेटियाबंबर थाना क्षेत्र की टेटिया कुशवाहा टोला निवासी अरुणा देवी की गुमशुदगी और निर्मम हत्या के रहस्य से पुलिस ने पर्दा उठा दिया है। 4 मई से लापता अरुणा देवी का शव 9 मई को हरपुर थाना क्षेत्र के अफजल नगर पंचायत स्थित कल्याणपुर गांव स्थित पुरानी सकरी नदी से सड़ी-गली हालत में बरामद किया गया था। अब पुलिस ने इस जघन्य हत्याकांड का खुलासा करते हुए आरोपी अनिल सिंह को गिरफ्तार कर लिया है। छह महीने का अवैध संबंध बना हत्या की वजह प्रेस वार्ता में एसडीपीओ सिंधु शेखर सिंह ने बताया कि मृतका के पति पंकज कुमार के जेल जाने के बाद अरुणा देवी का गांव के ही अनिल सिंह के साथ प्रेम संबंध हो गया था। बीते छह महीनों से दोनों के बीच लगातार बातचीत और मुलाकातें हो रही थीं। लेकिन जब अरुणा ने अनिल पर शादी का दबाव बनाना शुरू किया, तो वह बौखला उठा। समाज में बदनामी के डर से उसने प्रेमिका को रास्ते से हटाने की साजिश रच डाली। खेत में बुलाकर की गला घोंटकर एवं चाकू से गला काट कर की हत्या घटना वाले दिन आरोपी ने अरुणा को गांव से दूर कल्याणपुर बहियार के एक खेत में बुलाया। पहले कुछ देर बातचीत की, फिर मौका पाकर दुपट्टे से उसका गला घोंट दिया। पहचान मिटाने के लिए उसके कपड़े उतार दिए और चाकू से गला रेत दिया। हत्या के बाद कपड़े बसबिट्टी में फेंक दिए और चाकू को खेत में गड्ढा खोदकर छिपा दिया।

वैज्ञानिक अनुसंधान से खुली गुत्थी

पुलिस ने वैज्ञानिक अनुसंधान के तहत घटनास्थल के पास से हत्या में प्रयुक्त चाकू और मृतका के मोबाइल का सिम कार्ड खुदिया नहर मोड़ के पास से बरामद किया। पूछताछ में आरोपी ने अपना गुनाह कबूल कर लिया है। उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। थाना अध्यक्ष और पुलिस टीम की सराहनीय भूमिका इस पूरे मामले की जांच और खुलासे में थाना अध्यक्ष सोनू कुमार, एएसआई धर्मेंद्र पासवान, संजीव सिंह समेत अन्य पुलिसकर्मियों की भूमिका अहम रही। वहीं आरोपी ने अपने बयान में बताया कि मृतक महिला अरुणा देवी से फोन पर बातचीत होती थी और एक दूसरे से मिलना जुलना भी होता था। इसी बीच महिला का पति आर्म एक्ट में जेल चला गया और वो हम से शादी कर साथ रहने का दबाव बनाने लगी। समाज के बदनामी के डर के कारण उसे चुपके से बुला की उसकी हत्या कर दिया ।

दो नए खेल मैदानों का ऑनलाइन डीएम ने किया उद्घाटन

ग्रामीण युवाओं को मिलेगा खेल का नया मंच

दिव्य दिनकर संवाददाता तारापुर

जिलाधिकारी अवनीश कुमार ने तारापुर प्रखंड के अफजलनगर और धोबई पंचायत में बने दो खेल मैदानों का ऑनलाइन उद्घाटन किया। उद्घाटन के मौके पर डीआरडीए निदेशक अंजनी कुमार,अमरेश कुमार को पंचायत की मुखिया प्रियंका कुमारी ने बुके देकर उनका स्वागत किया। डीएम ने अफजलनगर पंचायत के +2 उत्क्रमित उच्च विद्यालय खुदिया और धोबई पंचायत के आरएनएन उच्च विद्यालय रणगांव में बने खेल मैदान का उद्घाटन मुख्यालय से किया।मौके पर डीआरडीए निदेशक अंजनी कुमार,अमरेश कुमार ने शिलापट्ट का पर्दा हटाकर व नारियल फोड़कर खेल का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में डीपीओ साहब यादव, पीओ अब्दुल गफूर, बीइओ कुमारी कंचन लता, कनीय अभियंता महेश कुमार, पंचायत रोजगार सेवक रंजीत कुमार झ, मुखिया कन्हैया लाल तांती सहित कई जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। विद्यालय के बच्चों में खेल मैदान के उद्घाटन को लेकर खासा उत्साह दिखा। बच्चों ने बैडमिंटन, वॉलीबॉल और बास्केटबॉल जैसे खेलों में भाग लिया। जिलाधिकारी ने पंचायतवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में खेल मैदानों का निर्माण युवाओं को खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर देगा। सरकार गांवों को स्पोर्ट्स विलेज के रूप में विकसित करने की योजना पर काम कर रही है। मनरेगा योजना के तहत हर पंचायत में करीब 10 लाख रुपये की लागत से एक-एक खेल मैदान बनाया जा रहा है। इनमें से अधिकतर का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। उद्घाटन कार्यक्रम में मुखिया प्रतिनिधि अजित कुमार, अकाउंटेंट आदित्य झा, बिक्रम कुमार, चेतन सिंह, विकास यादव, सुनील यादव, बमबम यादव, स्वच्छता पर्यवेक्षक बिरेन्द्र कुमार मंडल सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं और ग्रामीण मौजूद थे। अफजलनगर में खेल मैदान का उद्घाटन

डीएम साहब : सहायक शिक्षिका गीतांजलि को आखिर कब मिलेगा नियुक्ति पत्र

शिक्षक नियोजन वित्तीय वर्ष 2008 - 09 के काउंसिलिंग में शिक्षा माफिया का कारनामा

न्याय के लिए सात वर्ष से चक्कर काट रही वास्तविक गीतांजलि

वर्ष 2017 में निगरानी विभाग के जांच के बाद मामला का उद्भेदन

फर्जी बहाल शिक्षिका गीतांजलि का वास्तविक नाम शोभा कुमारी, कई माह जेल में रही, हाईकोर्ट से मिली जमानत

रंजीत विद्यार्थी

मुंगेर कोर्ट : शिक्षा नियोजन वर्ष 2008 के काउंसिलिंग वर्ष 2009 में सहायक शिक्षक के पद पर जमालपुर निवासी गीतांजलि देवी पति संजय मंडल के नाम से नियुक्त पत्र निर्गत हुई । इसी दौरान शिक्षा माफिया के जाल एवं षड्यंत्र के कारण वे नौकरी से वंचित हूई और उसके बदले असरगंज के माछीडिह गांव के शोभा कुमारी पति स्व.अजीत कुमार सिंह कथित रूप से गीतांजलि देवी के नाम से मध्य विद्यालय चाखंड असरगंज में सहायक शिक्षिका के पद पर नियुक्ति हो गई। वर्ष 2017 में निगरानी के जांच के बाद मामला का पदार्फाश हुआ और वास्तविक गीतांजलि देवी(जमालपुर)सात वर्षों से नियुक्त पत्र पाने हेतु चक्कर काट रही है। उन्होंने जिला पदाधिकारी, प्रमंडलीय आयुक्त, जिला कार्यक्रम समन्वयक, बिहार शिक्षा परियोजना मुंगेर, शिक्षा मंत्री एवं मुख्यमंत्री बिहार सरकार, अध्यक्ष, विधानसभा के आलावा अन्य से भी गुहार लगा चुकी है लेकिन, अब तक उन्होंने नियुक्ति पत्र नहीं मिला। वहीं, जमालपुर के गीतांजलि के नाम एवं शैक्षणिक, प्रशैक्षणिक तथा अनुभव प्रमाण पत्र पर गलत ढंग से मध्य विद्यालय चाखंड , असरगंज में नियोजित कथित शिक्षिका गीतांजलि देवी वास्तविक नाम शोभा कुमारी असरगंज निवासी को पुलिस ने 2 अगस्त 2024 को हिरासत में लिया।

कई माह जेल में बिताने के बाद हाईकोर्ट से जमानत मिलने के बाद कथित गीतांजलि देवी जेल से मुक्त हुई।

नालसी वाद ,पांच वर्ष के बाद एफआईआर में बदला

पीड़िता गीतांजलि देवी ने वर्ष 2018 में नालसी वाद संख्या 111/2018 दायर की। पांच वर्ष तक कानूनी लड़ाई के बाद कथित गीतांजलि देवी के विरुद्ध मे असरगंज थाना में प्राथमिकी कांड संख्या 172/2022 दर्ज हुई लेकिन ,बीते दो वर्ष से भ्रष्ट लोक सेवकों एवं शिक्षा माफिया के विरुद्ध अब तक अनुसंधान पुरा नहीं हुआ है।

निगरानी जांच के बाद मामला का पदार्फाश

शिक्षक नियोजन वर्ष 2008 में गलत ढंग से नियुक्त नियोजित शिक्षक एवं शिक्षिका के विरुद्ध मे वर्ष 2017 में पुलिस अवर निरीक्षक, निगरानी अन्वेषण ब्यूरो के जांच प्रभारी (जिला -मुंगेर) रहमत अली ने जिले के सभी नियोजित शिक्षकों का शैक्षणिक, प्रशैक्षणिक एवं अनुभव प्रमाण पत्र की जांच किया। इसी दौरान निगरानी विभाग ने प्राथमिक विद्यालय, सीताराम कन्या पाठशाला, जमालपुर में पहुंच कर ट्रेनिंग प्राप्त असरगंज में पदस्थापित शिक्षिका गीतांजलि देवी का प्रमाणपत्र एवं संचिका का जांच किया तो जमालपुर निवासी गीतांजलि देवी को पता चला कि उसके नाम एवं कागजात पर असरगंज निवासी कथित महिला गीतांजलि देवी वास्तविक नाम शोभा कुमारी मध्य विद्यालय, चाखंड ,असरगंज में नौकरी कर रही है। तब से वे नियुक्ति पत्र पाने के लिए चक्कर लगा रही है। अब वे आरटीआई एक्टिविस्ट व अधिवक्ता ओम प्रकाश पोद्दार से न्याय दिलाने के लिए गुहार लगाई है। पोद्दार ने बताया कि इस मामले में संबंधित पदाधिकारी से आरटीआई से जानकारी मांगी जाएगी, ताकि गीतांजलि देवी को न्याय मिल सकें।

सात सूत्री मांगों के समर्थन में पांच दिवसीय सामूहिक हड़ताल आशा कार्यकर्ता

दिव्य दिनकर संवाददाता तारापुर

तारापुर बिहार राज्य आशा संघ गोप गुट के आह्वान पर प्रखंड की आशा कार्यकर्ता मानदेय भुगतान सहित सात सूत्री मांगों के समर्थन में पांच दिवसीय सामूहिक हड़ताल पर चली गई है।बुधवार को अपने लंबित मांगों के समर्थन में आशा कार्यकताओं ने अनुमंडल अस्पताल तारापुर प्रांगण में प्रदर्शन करते हुए इमरजेंसी छोड़कर ओपीडी को पूर्णतः बंद करा दिया तो सरकार विरोधी नारेबाजी की। जिसमें हमारी मांगे जायज है, हम अपनी मांगे कैसे लेंगे, लड़कर लेंगे लड़कर लेंगे ,प्रोत्शाहन राशि नहीं मानदेय देना होगा जैसे नारे लगा रही थी।प्रदर्शन का नेतृत्व कर रही संघ की अध्यक्षा प्रेमलता कुमारी ने बताया कि वर्ष 2023 में आशा कार्यकर्ता संघ ने एक माह की हड़ताल की थी। सरकार ने हमारी मांगों में आशा कार्यकताओं फैसिलिटरों को 1,000 मासिक मानदेय भुगतान की बात कही थी। मासिक मानदेय भुगतान राशि 1000 से बढ़ाकर ढ़ाई हजार कर दिया गया, लेकिन 2 साल बीत जाने के बावजूद अब तक उसका भुगतान नहीं हो पाया है।जिसे लेकर संघ के आह्वान पर पांच दिवसीय सामूहिक हड़ताल किया जा रहा है। बताया कि आशा कार्यकताओं को 10,000 की अतिरिक्त राशि मुहैया कराने की मांग भी कयी है। साथ ही आशा कार्यकर्ता एवं फैसिलिटेटर को 65 वर्ष में सेवानिवृत्ति दी जाए तथा सेवानिवृत्ति पर 10 लाख रुपए का भुगतान का प्रावधान किया जाए।आशा व फैसिलिटेटर को देय राशि का भुगतान पोर्टल के माध्यम से किया जाए।उधर आशा कार्यकताओं की सामूहिक हड़ताल से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर टीकाकरण और बंध्याकरण सहित कई अन्य कार्य ठप हो गए हैं। मौके पर विनीता कुमारी,प्रतिभा देवी,संगीता कुमारी,पूनम कुमारी,अफसरी खातून,वीणा कुमारी,रंजू कुमारी,मंजू देवी,रूबी कुमारी सहित दर्जनों आशा कार्यकर्ता मौजूद थी।

मुंगेर में काली मंदिर के रास्ता निर्माण को लेकर दबंगों ने जेसीबी से तोड़ा शिक्षा का 'मंदिर' , आक्रोश

समाचार संकलन करने गए मीडिया कर्मियों का दबंगों ने मोबाइल छीनने का किया प्रयास

स्थानीय लोगों में आक्रोश,

दबंगों के भय से कोई मुंह खोलने को तैयार नही

मध्य विद्यालय फुलकिया बरियारपुर की घटना

रंजीत कुमार विद्यार्थी

बरियारपुर(मुंगेर) : मुंगेर जिला अंतर्गत बरियारपुर प्रखंड के फुलकिया गांव में कुछ सामंती सोच के दबंगों द्वारा मध्य विद्यालय फुलकिया बरियारपुर का रसोई भवन और चार दिवारी को रात्रि में जेसीबी मशीन से तोड़कर कर काली मंदिर जाने का रास्ता बनाने का सनसनी खेज मामला प्रकाश में आया है। विद्या के मंदिर को तोड़ने से स्थानीय लोगों में आक्रोश है लेकिन कुछ सामंती सोच के दंबगई के कारण लोग कुछ बोलने को तैयार नहीं है। लेकिन यह घटना बरियारपुर में हवा की तरफ फैल गया हैं। इस सम्बन्ध में विद्यालय की प्रधानाध्यापिका आरती विश्वकर्मा और सचिव अंबिका देवी के लिखित शिकायत पर बरियारपुर थाना में प्राथमिकी दर्ज कर अज्ञात लोगों को के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराया गया हैं। इसकी जानकारी बरियारपुर थानाध्यक्ष वीरभद्र सिंह ने दी । पुलिस घटना की जांच में जुट गई हैं ।

क्या है घटना

बरियारपुर प्रखंड के मध्य विद्यालय फुलकिया की प्रधानाध्यापिका आरती विश्वकर्मा जब सुबह में विद्यालय पहुंची तो विद्यालय के पूर्वी भाग का दीवार टूटा हुआ था। पूर्वी भाग में दो कमरे का भवन भी पूरी तरह जमींन दोज था। एनएच 80 के तरफ का दीवार भी करीब 30 फीट से अधिक तोड़ दिया गया था। प्रधानाध्यापिका आरती विश्वकर्मा ने इसकी जानकारी डीपीओ को दिया तथा इसकी लिखित शिकायत विधालय के सचिव अंबिका देवी के संयुक्त हस्ताक्षर से बरियारपुर थाना में किया । दर्ज प्राथमिकी में आरोप। लगाया गया की जब वे सोमवार को सुबह में विद्यालय पहुंची तो विद्यालय का कीचन रूम का दो कमरा और चार दिवारी जेसीबी मशीन से रविवार की रात में ही ध्वस्त कर दिया गया था। यह कार्य किसी अज्ञात लोगों ने किया हैं। विद्यालय का भवन तथा चार दिवारी तोड़ने का मुख्य कारण यह है कि विद्यालय के पीछे वाले भाग में श्री मंगला काली मां का मंदिर बनाया जा रहा है। मंदिर जाने का रास्ता पूर्व में विद्यालय के पश्चिमी भाग की तरफ से जाता था। लेकिन मंदिर को सीधा एनएच - 80 से जोड़ने के लिए विद्यालय के भवन तथा चार दिवारी तो तोड़ दिया गया। बिना

किसी के अनुमति से विद्यालय के भवन को तोड़ने का कोई नियम नहीं हैं। मंदिर जाने के लिए विद्यालय की भवन को दंबगई से तोड़ा गया हैं।

भवन टूटने से मध्याह्न भोजन बंद

विद्यालय परिसर स्थित जिस दो कमरे के भवन को तोड़ा गया हैं उस भवन में बच्चों का मध्याह्न भोजन बनता था। लेकिन सोमवार से भोजन बंद हैं। भवन तथा दीवार तोड़ने से मध्याह्न भोजन का बनाने का बहुत समान भी नष्ट हो गया हैं। विद्यालय के शिक्षक भी असुरक्षित महसूस कर रहा है। कुछ दबंगों द्वारा विद्यालय के अन्य शिक्षिका को भी कही शिकायत नहीं करने की धमकी दिया हैं।

क्या है नियम

विद्यालय के भवन तथा चार दिवारी को बिना शिक्षा विभाग के अनुमति का तोड़ने का कोई नियम नहीं हैं । यह विद्यालय कई दशकों से कार्यरत हैं। विद्यालय के जमीन पर निर्माणधीन मंगल काली मंदिर जाने के लिए रास्ता बनाने का कोई सरकारी नियम नहीं है। सिर्फ कुछ सामंती सोच के दबंगों द्वारा धर्म के नाम पर विद्यालय के मन्दिर को तोड़ने का काम किया गया है। वर्तमान में यह विद्यालय में बच्चों का पढ़ाई का कार्य पश्चिमी भाग के भवन में होता है। लेकिन खाना बनाने का कार्य पूर्वी भाग में बना दो कमरे के भवन में होता था। -----------

मंगलवार को निर्माण कार्य था जारी

विद्यालय के भवन और चार दिवारी को तोड़ने के बाद भी सामंती सोच के दबंगों का दबंगई कम नहीं हुआ था। थाना में प्राथमिकी दर्ज होने के बाद भी विधालय के बगल से मंदिर के चार दिवारी का काम युद्ध स्तर पर चल रहा था। जबकि स्थानीय पुलिस प्रशासन किसी भी प्रकार का विद्यालय के जमीन पर निर्माण कार्य करने पर रोक लगा रखा था। लेकिन जब मंगलवार को दिन मे बरियारपुर के पत्रकारों ने घटना की फोटो सहित अन्य जानकारी लेने पहुंचे, तो तीन चार की संख्या में दबंगों ने पहले तो फोटो खींचने से मना किया। जब पत्रकार फोटो खींचने लगे, तो कोई मोबाइल छीनने का प्रयास किया । लेकिन जब पत्रकार उन लोगों से सवाल करने लगा तथा अड़ गए तब सामंती सोच के दबंगों का होश ठिकाने लग गया।

स्थानीय लोग मुंह खोलने से भयभीत

मध्य विद्यालय फुलकिया बरियारपुर में सबसे अधिक अनुसूचित जाति और ओबीसी वर्ग के बच्चे पढ़ते है। धर्म के ठेकेदारों और सामंती सोच के दबंगों का अधिकांश बच्चा निजी विद्यालय में पढ़ता था। विद्यालय के भवन और चार दिवारी तोड़ने को घटना से स्थानीय लोगों में आक्रोश है। लेकिन इन दबंगों के समाने कोई मुंह खोलने को तैयार नहीं है। कुछ लोगों द्वारा विद्यालय का भवन और दीवार तोड़ने की घटना का फोटो और वीडियो जरूर वायरल किया हैं। गौरतलब है कि इस विद्यालय में करीब 200 से अधिक बच्चा पढ़ता है।

क्या बोले डीपीओ

बरियारपुर के प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी सह डीपीओ आनंद वर्मा ने कहा कि मध्य विद्यालय फुलकिया बरियारपुर का कीचन भवन तथा चार दिवारी तोड़ने की जानकारी मिला है। यह गलत ढंग से तोड़ा गया है। इस सम्बन्ध में प्रधानाध्यापिक को प्राथमिकी दर्ज करने का आदेश दिया गया है।

बोले थानाध्यक्ष

बरियारपुर थानाध्यक्ष वीरभद्र सिंह ने कहा कि विद्यालय के प्रधानाध्यापिका के लिखित शिकायत पर अज्ञात लोगों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज किया गया है। विद्यालय के जमीन पर किसी भी प्रकार का कार्य करने पर रोक लगाया है। इस घटना में शामिल असमाजिक तत्वों की पहचान कर जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

विकसित भारत के अमृत स्टेशन

देश भर में पुनर्विकसित अमृत स्टेशनों का उद्घाटन

जिसमें शामिल हैं झारखंड के 3 अमृत स्टेशन

राजमहल

शंकर पुर

गोविन्दपुर रोड

लाभ

- सिटी सेंटर के रूप में विकास - रूफ प्लाजा, शॉपिंग जोन, विश्राम कक्ष, विशाल परिसंचारी क्षेत्र आदि जैसी सुविधाएं
- विरासत भी विकास भी -स्थानीय वास्तुकला से प्रेरित स्टेशन भवन
- अलग-अलग प्रवेश और निकास द्वार, बेहतर पार्किंग, लिफ्ट, एस्केलेटर, लाउंज, प्रतीक्षालय, ट्रैवलेटर, दिव्यांगजन अनुकूल सुविधाएं
- मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी के एकीकरण से ये स्टेशन बनेंगे क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र
- स्टेशनों के डिज़ाइन में ऊर्जा दक्षता और हरित उपायों को प्राथमिकता, जिससे न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव

प्रधानमंत्री

के कर कमलों द्वारा

(वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से)

22 मई, 2025 | प्रातः 10:30 बजे

गरिमामयी उपस्थिति

राज्यपाल , झारखंड | मुख्यमंत्री , झारखंड | केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री | केंद्रीय विधि एवं न्याय (स्वतंत्र प्रभार) तथा संसदीय कार्य राज्य मंत्री

भारतीय रेल